

ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक
पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5

अंक : 5

जून - जुलाई 2015

मूल्य 15/-

संरक्षक

डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक

डा. महेश पाराशर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक

डा.(श्रीमती) शोनु मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पाराशर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक

पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता

डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार

श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा

ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ॥
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ॥
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

मधुमेह के घरेलू उपचार	डा. महेश पाराशर	2
कुंडली के ग्रहों को पलट देते हैं ये 9 आसान उपाय	डा. रचना के भारद्वाज	4
भवन, सन्तान एवं रोग मुक्ति हेतु सामान्य उपाय	डा. शोनु मेहरोत्रा	5
बुध- बुद्धि के साथ पद एवं खूब धनमान देता है।	डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा	6
बच्चों पर अनावश्यक बोझ न डाले	डा. अरविन्द मिश्र	7
रुद्राक्ष: दैवीय शक्ति का प्रतीक है परिवार में सुख समृद्धि के उपाय	पवन कुमार मेहरोत्रा	8
लाल किताब की ज्योतिषीय उपयोगिता	पुष्पित पाराशर	9
ग्रीष्मकालीन रोगों का ज्योतिषीय संबंध	पं. आर. एस. द्विवेदी	10
गिरना नहीं है गिरकर संभलना है जिन्दगी	कविता अग्रवाल	11
प्याज लू का अचूक नुस्खा है	सुरेश अग्रवाल	12
श्रावण मास में शिव पूजा	दत्तात्रेय शर्मा	12
वरुण मुद्रा	श्री भगवान पाराशर	13
मासिक राशिफल	विष्णु पाराशर	13
उतावलापन	पुष्पित पाराशर	14-15
पूजा - सामिग्री	विजय शर्मा	16
		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होंगे। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराइट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पाराशर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा- से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लेक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

“प्रधान संपादक की कलम से”



डा. महेश पारासर

ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

मधुमेह के घरेलू

उपचार

बदलता परिवेश और रहन सहन शहर में मधुमेह के मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा कर रहा है। खान-पान पर नियंत्रण न होना भी इसके लिए जिम्मेदार है। डायबिटीज के मरीज को सिर्द, थकान जैसी समस्याएं हमेशा बनी रहती हैं। मधुमेह में खून में शुगर की मात्रा बढ़ जाती है। वैसे इसका कोई स्थायी इलाज नहीं है परंतु जीवन शैली में बदलाव, शिक्षा तथा खान पान की आदतों में सुधार के द्वारा रोग को पूरी तरह नियंत्रित किया जा सकता है।

मधुमेह लक्षण

1. बार बार पेशाब आना।
2. बहुत ज्यादा प्यास लगना।
3. बहुत पानी पीने के बाद भी गला सूखना।
4. खाना खाने के बाद भी बहुत भूख लगना।
5. मितली होना और कभी कभी उल्टी होना।
6. हाथ पैर में अकडन और शरीर में झनझनाहट होना।
7. हर समय कमजोरी और थकान की शिकायत होना।
8. आंखों में धुंधलापन होना।
9. त्वचा या मूत्र मार्ग में संक्रमण।
10. त्वचा में रूखापन आना।
11. चिडचिडापन
12. सिरदर्द
13. शरीर का तापमान कम होना।
14. मांसपेशियों में दर्द।
15. वजन में कमी होना।

यहाँ मधुमेह को नियंत्रण करने के हम कुछ आसान से घरेलू उपाय बता रहे हैं।

तुलसी के पत्ती में ऐन्टीआक्सिडन्ट और जरूरी तेल होते हैं जो इनसुलिन के लिये सहायक होते हैं। इसलिए शुगर लेवल को कम करने के लिए दो से तीन तुलसी के पत्ते को प्रतिदिन खाली पेट लें, या एक टेबलस्पून तुलसी के पत्ते का जूस ले।

10 ग्राम आवलें के जूस को 2 ग्राम हल्दी के पाउडर में मिला लीजिए। इस घोल को दिन में दो बार लीजिए। इससे खून में शुगर की मात्रा नियंत्रित होती है।

काले जामून डायबिटीज के मरीजों के लिए अचूक औषधि मानी जाती है। मधुमेह के रोगियों को काले नमक के साथ जामुन खाना चाहिए। इससे खून में शुगर की मात्रा नियंत्रित होती है।

लगभग एक महीने के लिए अपने रोज के आहार में एक ग्राम दालचीनी का इस्तेमाल करें, इससे ब्लड शुगर लेवल को कम करने के साथ वजन को भी नियंत्रण करने में मदद मिलेगी।

करेले को मधुमेह की औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसका कडवा रस शुगर की मात्रा कम करता है। अतः इसका रस रोज पीना चाहिए। उबले करेले के पानी से मधुमेह को शीघ्र स्थाई रूप से समाप्त किया जा सकता है।

मधुमेह के उपचार के लिए मैथी दाने का बहुत महत्व है। इससे पुराना मधुमेह भी ठीक हो जाता है। मैथीदानों का चूर्ण नित्य प्रातः खाली पेट दो टी स्पून के साथ लेना चाहिए।

काँच या चीनी मिट्टी के बर्तन में 5-6 भिड़ियाँ काटकर रात को गला दीजिए। सुबह इस पानी को छानकर पी लीजिए।

मधुमेह मरीजों को नियमित रूप से दो चम्मच नीम और चार चम्मच केले के पत्ते के रस को मिलाकर पीना चाहिए।

ग्रीन टी भी मधुमेह में बहुत फायदेमंद मानी जाती है। ग्रीन टी में पॉलीफिनोल्स होते हैं जो एक मजबूत एंटी आक्सीडेंट और हाइपो ग्लाइसेमिक तत्व हैं। शरीर इन्सुलिन का सही तरह से इस्तेमाल कर पाता है।

सहजन के पत्तों में दूध की तुलना में चार गुना कैलाशियम और दुगुना प्रोटीन पाया जाता है। मधुमेह में इन पत्तों के सेवन से

भोजन के पाचन और रक्तचाप को खतम करने में मदद मिलती है। इसके नियमित सेवन से भी लाभ प्राप्त होता है।

एक टमाटर, एक खीरा और एक करेला को मिलाकर जूस निकाल लीजिए। इस जूस को हर रोज सुबह सुबह खाली पेट लीजिए। इससे डायबिटीज में बहुत फायदा होता है।

गेहू के पौधों में रोगनाशक गुण होते हैं। गेहू के छोटे छोटे पौधों से रस निकालकर प्रतिदिन सेवन करने से भी मधुमेह नियंत्रण में रहता है।

मधुमेह के मरीजों को भूख से थोड़ा कम तथा हल्का भोजन लेने की सलाह दी जाती है। ऐसे में खीरा नीबू निचोड़कर खाकर भूख मिटाना चाहिए।

मधुमेह उपचार में शलजम का भी बहुत महत्व है। शलजम के प्रयोग से भी रक्त में स्थित शर्करा की मात्रा कम होने लगती है। इसके अतिरिक्त मधुमेह के रोगी को तोरई, लौकी, परवल, पालक, आदि का प्रयोग भी ज्यादा करना चाहिए।

6 बेल पत्र, 6 नीम के पत्ते, 6 तुलसी के पत्ते, 6 बैंगनबेलियों के हरे पत्ते, 3 साबुत काली मिर्च ताजी पत्तियाँ पीसकर खाली पेट पानी के साथ लें और सेवन के बाद कम से कम आधा घंटा और कुछ न खाएं इसके नियमित सेवन से भी शुगर सामान्य हो जाती है।

महेश पारसर

अमृत वचन

इस जीवन में मुफ्त में कुछ नहीं मिलता। हर वस्तु का मूल्य चुकाना पड़ता है। जो वस्तु जितनी मूल्यवान होती है उसका मूल्य भी अधिक चुकाना पड़ता है। अध्यात्म ज्ञान का मूल्य भी सर्वाधिक है जिसे चुकाना आवश्यक है।

हमारे कर्म हमारी इच्छा के अनुरूप ही होते हैं तथा ये कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं।

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या— 1. कृपया बतायें कि सेप्टिक टैंक बनवाने का सही स्थान कौन सा है?

साधवी मंगल, उज्जैन

समाधान— सेप्टिक टैंक उत्तर-पश्चिम के उत्तर या फिर उत्तर पश्चिम के पश्चिम में बनवाना चाहिये। यह भवन की दीवार से थोड़ी दूरी पर बनवायें।

समस्या— 2. मेरे पूरे घर में वास्तु दोष है। कोई उपाय

पाठकों के पत्र

परम श्रद्धेय गुरु जी,

पत्रिका का अप्रैल मई अंक प्राप्त किया। अक्षय तृतीया पर लिखा सम्पादकीय लेख पंसद आया। ऐसे ही त्यौहारों के बारे में लिखते रहे। धन्यवाद
प्रवीन राघव, मथुरा

आदरणीय पारासर जी,

शनि कितना शुभ कितना अशुभ हो सकते हैं। इसके बारे में विस्तार से एक लेख प्रकाशित करें। अक्सर लोग शनि के बारे में गलत धारणायें मन में बना लेते हैं। आपकी अति कृपा होगी।

समीर सचदेवा, आगरा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरा राजनैतिक कैरियर कब आगे बढ़ेगा। उपाय बताये।

आर.डी.वर्मा, दिल्ली

उत्तर— आपकी राहु की महादशा चल रही है। प्रयास करें, सफलता अवश्य मिलेगी। पुखराज व मूंगा रत्न धारण कर लें।

प्रश्न 2. जीवन में संघर्ष अधिक है। कोई काम नहीं बनता। मार्ग दर्शन करें।

विजय सहगल, आगरा।

उत्तर— शनि की साढेसाती व अर्न्तदशा चल रही है। शनि नीच का भी है। शनि के मंत्रों का जाप करें। शनि पूजा व उपासना करें। पन्ना रत्न तुरंत धारण करें। लाभ मिलेगा।

डॉ. महेश पारासर

समस्या— 1. कृपया बतायें कि सेप्टिक टैंक बनवाने का सही स्थान कौन सा है?

राकेश गर्ग, अलीगढ़

समाधान— घर का वास्तु किसी वास्तुशास्त्री से चैक करवाये। अपने घर में सम्पूर्ण वास्तु दोष निवारण यंत्र भी स्थापित कर सकते हैं। अन्य जानकारी व उपाय वास्तुशास्त्री आपको बता देंगे। बिना समाधान सम्भव नहीं।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203



कुंडली के ग्रहों को पलट देते हैं

धे 9 आसान उपाय

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)

वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

1. यदि जीवन में कोई बहुत बड़ी समस्या आई है और सभी रास्ते बंद हो चुके हैं तो आप सुबह जल्दी उठकर पीपल के पेड़ को कुंकुम चावल चढाकर कहें मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरी समस्या का समाधान करें व दूध मिश्रित जल चढाएँ। कुछ ही दिनों में आपकी समस्या का समाधान हो जाएगा।

2. ज्योतिष में चंद्रमा को मां का रूप माना गया है। कुंडली में चंद्रमा प्रतिकूल होने पर अपनी माता या बुजुर्ग स्त्रियों का आशीर्वाद लेकर ही घर से निकलें। शिव मंदिर में जल चढाना भी विपरीत दोष को दूर करता है।

3. अगर आपके पास कुंडली नहीं है और जन्मकुंडली के अभाव में आपकी समस्या का हल नहीं मिल रहा है तो रूद्रावतार भैरों बाबा को याद करें। किसी भी रविवार से शुरू करके **ओम काल भैरवाय** नमः मंत्र की रोजाना पवित्र मन से कम से कम एक माला नियमित रूप से करें। जल्द ही न केवल आपकी समस्या को सुलझाने का मार्ग मिल जाएगा बल्कि प्रतिकूल ग्रह भी आपके पक्ष में हो जायेंगा।

4. ज्योतिष के अनुसार शनि की दशा या साढेसाती लगने पर मनुष्य का जीवन कठिनाईयों से भर जाता है। यदि आप पर भी शनि की दृष्टि है तो इन उपायों को आजमाएं। शनि की अशुभ स्थिति में शनिवार को नीले रंग के कपड़े धारण ना करें। शनि को प्रसन्न करने के लिए हनुमान जी को तिल का तेल, सिंदूर, उड़द और आकडे या धतूरे की माला चढाएं।

5. मंगल दोष होने पर भी हनुमानजी की आराधना से कष्टों का तुरंत समाधान होता है। मंगल की दृष्टि होने पर रोजाना सच्चे मन से हनुमानचालीसा का पाठ करें और उन्हे सिंदूर का चोला चढाएं।

6. यदि कुंडली में गुरु वक्री हो या खराब फल दे रहा हो तों भगवान विष्णु की आराधना फल देती है। प्रतिदिन विष्णु अथवा विष्णु अवतार जैसे राम, कृष्ण मंदिर में जाकर प्रणाम करें। यदि

यह भी संभव नहीं हो तो अपने बुजुर्गों तथा गुरुजनों का आशीर्वाद लें।

7. कुंडली में राहु आकाश की तरह होता है। जो जब फैलने पर आता है तो अनंत हो जाता है। राहु की दशा में मां सरस्वती हनुमानजी अथवा मां दुर्गा की पूजा करनी चाहिए। सबसे बड़ी बात जब भी राहु की दशा हो तो मांस, मदिरा तथा परस्त्री सेवन तुरंत बंद कर देना चाहिए। इससे भी बेहद प्रभावी लाभ मिलता है।

8. केतु की दशा खराब होने पर गजागन गणपति को याद करना सर्वश्रेष्ठ है। गणपति अर्थवाशीर्ष का पाठ करना केतु के कुप्रभाव को दूर करता है।

9. आपकी कुंडली में कोई ग्रह खराब चल रहा हो या न चल रहा हो, आपको हमेशा जरूरतमंदों को कुछ न कुछ दान करते रहना चाहिए। इससे उनकी दुआएं मिलती है। जो बुरे समय के कुप्रभाव को कम कर देती है।

रचनाएँ आमंत्रित हैं

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रूचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आयुर्वेदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्राणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक विज्ञान, भारतीय संस्कारों की स्वीकार्यता, सामाजिक-परिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते हैं।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाट्स ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते हैं।

हमारा पता है- भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम.

जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल- pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs, Enemies & Property

**Remedies by Stones,
Yantra, Mantra & Pooja**

Horoscope, Match Making & Varshphal

Mon to Thu 12 PM to 6 PM

CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262, 2856666



भवन, सन्तान एवं रोग मुक्ति हेतु सामान्य उपाय

डा. शोनु मेहरोत्रा

वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,

वास्तु प्रवक्ता; अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान

ग्रहों को हमारे जीवन में हर पल एवं हर कार्य के लिए बड़ा महत्व है, ग्रह हमारे जीवन में अच्छा व बुरा प्रभाव डालते हैं। ग्रहों से सम्बंधित उपाय करने से हमें उस ग्रह की अशुभता से छुटकारा मिलता है। इन उपायों को सही तरीकें से करने में हमे सभी परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। किन्तु यदि वे उपाय गलत ढंग से अथवा अविश्वास रखकर किए जायें तो उनका प्रभाव शुभ होने की जगह हानि कारक भी हो सकता है।

किसी भी उपाय को अपनाने से पूर्व आपको अपनी जन्मकुंडली का अध्ययन ध्यान पूर्वक करवा लेना चाहिये। तत्पश्चात् आपको उससे सम्बन्धित उपाय करना चाहिए।

भवन निर्माण सम्बन्धी उपाय : गृह प्रवेश करने से पहले भवन में तुलसी के पौधे एवं गऊ को प्रवेश कराना शुभ होता है। इससे घर में सुख व शान्ति का वास होता है तथा सम्पन्नता बढ़ती है।

भवन निर्माण की नींव भरते समय उसमें शहद से भरा पात्र दबा दे तो भवन आजीवन सभी खतरों से मुक्त हो जाता है।

यदि शनि अशुभ हो तो भवन निर्माण से पहले गौदान करें। तत्पश्चात् कन्याओं को भोजन कराएँ। इसके बाद भवन की नींव रखें। शनि का अशुभ प्रभाव खत्म होगा।

शनि चौथे भाव में स्थित हो तो जातक को पैतृक भूमि पर मकान नहीं बनाना चाहिये। यदि जातक मकान बनाता है तो परिवार के सदस्यों को अनेक कष्ट उठाने पड़ेंगे।

शनि यदि छठे भाव में स्थित हो तो भवन निर्माण से पूर्व उस भूमि पर यज्ञ अवश्य कराये। ऐसा कराने से केतु का अशुभ प्रभाव खत्म हो जायेंगा।

यदि शनि ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो मुख्य द्वार बनवाने से पूर्व चौखट के नीचे कलावा और चन्दन दबायें।

भवन निर्माण यदि करायें तो उसे अधूरा न छोड़े अधूरे घर में राहु का वास होता है।

भवन निर्माण करने वाले मजदूरों को कार्य आरम्भ करने से पहले उन्हें मिष्ठान खिलायें। तदोपरान्त कार्य आरम्भ करायें।

भवन निर्माण करने से पूर्व उस स्थान पर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

यदि भवन निर्माण करते वक्त वहां चीटियां निकले तो नव चीटियों

को चीनी एवं वेसन खिलायें।

यदि केतु पांचवे भाव में हो तो भवन निर्माण से पहले केतु का दान अवश्य करें।

शनि यदि अष्टम भाव में हो तो 48 साल की उमर से पहले मकान न बनवायें अन्यथा किसी पिता तुल्य व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

सन्तान सम्बन्धी उपाय : गाय को अपने भोजन से आधा अंश खिलायें तो संतान रोग से मुक्ति होती है।

सन्तान प्राप्ति के लिये श्री गणेश जी की उपासना लाभकारी होगी।

यदि शुक्र उच्च भाव में हो तो स्त्री को सम्मान देने से सुख की प्राप्ति होती है।

सन्तान प्राप्ति न होने की स्थिति में गाय को भोजन कराये। सन्तान की दीर्घायु के लिये पिता को बृहस्पतिवार का व्रत रखना चाहिये।

सन्तान यदि रोगी हो तो पीपल के वृक्ष की सेवा करने से लाभ होगा।

रोग मुक्ति के उपाय : रोग से बचने के लिये अपने भोजन का चौथाई अंश गायों को और चौथाई अंश कुत्तों को डालने से शीघ्र ही रोग का प्रभाव कम होता है।

घर में यदि कोई सदस्य बीमार पड़ जाये तो उसे शहद में चंदन मिलाकर चटायें।

यदि पुत्र रोगी हो तो कन्याओं को हलवा खिलायें।

यदि स्त्री बीमार हो तो गऊदान करें, लाभ होगा। यदि पुत्री बीमार हो तो पीपल के वृक्ष की लकड़ी उसके सिरहाने रखें।

मन्दिर में गुप्तदान करने से रोगी को लाभ होगा।

यदि सिर में पीड़ा हो तो चन्दन और केसर एक साथ घिसकर लगाने से सिर की पीड़ा खत्म होती है।

मिश्रित उपाय : हमेशा सत्य का पालन करें। स्वार्थी न बने। माता पिता का आदर करें। तीर्थ यात्रा करें। गाय के नवजात बछड़े को पुत्र की तरह स्नेह से पालें। रात्रि में अपने सिरहाने दूध से भरा पात्र रख लें सुबह होते ही उस दूध को बड़ की जड़ में बहा दें तो लाभ होगा।

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magazine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us



and get 15% discount*

*valid for a single user



बुध- बुद्धि के साथ पद एवं खूब धनमान देता है।

आचार्य डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मंयक'
धात्री एस्ट्रोलाजीकल ब्यूरो
श्री जगदम्बा कालोनी ठाकुर बाबा रोड़

प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्य सौम्यगुणापेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

बुध को काल पुरुष की वाणी और बुद्धि माना गया है। यह ग्रह आकाश में सूर्योदय से पहले या सूर्यास्त के बाद दिखाई देता है। इसे सूर्य का सहायक ग्रह कहा गया है क्योंकि यह सूर्य से अधिकतम 28 अंश दूर तक जा सकता है। यह सौर परिवार का सबसे लघु एवं चमकदार ग्रह है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इसे इन्दुसुत कहा गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार बुध चंद्रमा जैसा ही है वहां पर धूल भरा उबड़ खाबड़ चटानी मैदान है यह पृथ्वी से 59314761.9—किमी दूर है यह लगभग 88 दिनों में सूर्य की परिक्रमा पूर्ण कर लेता है। यह एक राशि पर लगभग 21 से 30 दिन तक रहता है। बुध का कोई उपग्रह नहीं है तथा इस पर वायुमंडल भी नहीं है। ज्योतिष में इसे नपुंसक ग्रह माना गया है। सूर्य एवं शुक्र का यह मित्र है चंद्रमा का शुत्र है। तथा मंगल, गुरु, शनि, एवं राहु केतु से सम सम्बन्ध रखता है। हरा रंग इसके आधिपत्य में है। यह उत्तर दिशा का स्वामी है। शरीर में यह त्वचा का कारक है। जन्मांक में चौथे एवं दसवें भाव का कारक ग्रह है कुण्डली में 2,4,6,8,10,11 वे भाव इसके लिए शुभ है। लेकिन इन भावों में यह क्रमशः 5,3,9,1,8 एवं 12 वे भाव में स्थित ग्रहों से वेध पाता है। वेध पाने पर शुभ बुध का प्रभाव भी अशुभ मिलता है। बुध की पूर्ण दृष्टि अपने भाव से सातवें भाव पर रहती है। चौथे एवं आठवें भाव पर 75 प्रतिशत रहती है। बुध कन्या राशि में 15 अंश तक उच्च राशि में तथा इसी राशि में 16 से 20 अंश तक मूल त्रिकोण राशि में तथा कन्या में ही 21 से 30 अंश तक और सम्पूर्ण मिथुन राशि में स्वराशि का कहलाता है। मीन राशि में 13 अंश तक नीच राशि में होता है इसका पूर्ण अधिकार आश्लेषा, ज्येष्ठा रेवती नक्षत्र पर है। पन्ना इसका प्रिय रत्न है।

बुध प्रभावी व्यक्ति काव्य एवं संगीत कला में रुचि वाला विनोदी स्वभाव, प्रसन्न, द्विअर्थी भाषा का प्रयोग करने वाला, जैसा देश वैसा भेष के अनुसार चलने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति आत्मविश्वासी कामकाजी एवं हाजिर जबाब होता है। बुध प्रभावित व्यक्ति प्रायः स्वस्थ रहता है। इन्हें मानसिक श्रम अधिक करना पड़ता है बुध ग्रह कुण्डली में अशुभ स्थिति में हो तथा चलित में जब भी अशुभ स्थिति में आये तो व्यक्ति को निम्न लिखित विकार पीडा देते हैं। वात-पित्त-कफ से संबधित रोग, चर्म रोग, कर्ण रोग, नाक एवं गले के रोग, मति भ्रम, बौद्धिक असंतुलन, कामला, पेट के रोग, गुप्त रोग, डाइबिटीज, वाणी दोष, दाद- खाज, कुष्ठ रोग एवं लकवा आदि। बुध के दुष्प्रभाव से बचने के लिये बुध की वस्तुओं का दान, पन्ना धारण करना एवं बुध मंत्र का जप, बुध यंत्र धारण करना आदि है।

बुध ग्रह मूलांक 5 का स्वामी है इसके लिये अंक 1,4,6,7 मित्र है। 3,8,9 सम है अंक 2 इसका शत्रु है बुध ग्रह का सर्वाधिक प्रभाव वाले व्यक्ति अंक 5 का उपयोग कर लाभ ले सकते हैं।

व्यवसाय तथा कार्य- बुध का कुण्डली पर सर्वाधिक प्रभाव हो

अथवा बुध धन्धे का द्योतक हो और बुध का शुभ सम्बंध गुरु एवं शुक्र के साथ लग्न एवं लग्नेश से बन जाये तो व्यक्ति की रुचि एवं व्यवसाय निम्न विषयों में होती है। यथा ज्योतिष साहूकारी, बैंकिंग लिपिक, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, डेयरी फार्म, पशुओं द्वारा उत्पन्न वस्तुओं का व्यवसाय, अध्यापन, लेखन, छापाखाना, पुस्तक विक्रय, ड्राइवर, वर्कशाप, गैराज, आटोमोबाइल्स, पार्ट्स, सेल्स एवं सर्विस, भवन निर्माण, शिल्पकार, कैमिकल उद्योग आदि।

जन्मलग्न वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, के लिये बुध विशेष धन देने वाला ग्रह है। यदि बुध द्वितीय, पंचम, नवम भाव का स्वामी हो ओर इसका प्रभाव, लग्नेश, चंद्र लग्न, चंद्र लग्नेश, सूर्य लग्न, सूर्य लग्नेश, पर हो तो मनुष्य बुद्धिजीवी होकर शिक्षक प्रोफेसर आदि होकर अपनी आजीविका चलाता है। इस प्रकार के बुध का प्रभाव गुरु पर हो तथा गुरु धन्धे का द्योतक बुध के प्रभाव को लिये हो तो जातक भाषणों द्वारा धनार्जन करता है अर्थात् वकील होता है या धर्म प्रवचन कर्ता होता है। बुध व्यापार का कारक है यदि शनि शुक्र से सम्बन्ध बनाए तो जातक कपड़े का व्यापारी होता है। उपरोक्तानुसार बुध यदि सूर्य से प्रभावित हुआ तो व्यक्ति लेखक, क्लर्क, स्टेनो, एकाउंट ऑफिसर आदि होता है बलवान बुध मंगल के साथ हो तो व्यक्ति गणित या एंकाउंट का व्याख्याता होता है। फलित ज्योतिष बुध के अधिकार क्षेत्र में है और बुध का सम्बन्ध यदि चतुर्थ, नवम, और द्वादश भाव से हो और बुध द्वितीयेश के साथ धन्धे का द्योतक हो तो जातक ज्योतिष द्वारा धन कमाता है। बुध मनोरंजन का भी ग्रह है और इसका सम्बन्ध शुक्र से चौथे एवं पाचवे भाव के स्वामी से हो जाएं तो जातक हास्य, विनोद, अभिनय आदि से आजीविका पाता है यदि बुध चौथे भाव के स्वामी से तथा मंगल से प्रभावित हो तो व्यक्ति जायदाद की दलाली से धन कमाता है।

लग्नानुसार बुध मेष लग्न के लिए बुध तृतीयेश एवं षष्ठेश होता है। दोनों पाप स्थान है। इस लग्न के लिये बुध केन्द्र में होगा तो धन के मामले में अशुभ परिणाम देगा। वृष लग्न के लिये बुध दूसरे भाव का तथा पांचवे भाव का स्वामी होकर शुभ फलदायक होता है। धन के संबंध में लाभदायक है। बली होने पर धन खूब देता है। जन्म लग्न मिथुन होने पर बुध लग्नेश, चतुर्थेश होता है। यद्यपि केन्द्राधिपत्य दोष के कारण बलहीन हो जाता है। लेकिन लग्नेश होने से धन व्यवसाय में खूब लाभ देता है। कर्क लग्न के लिये यह अशुभ फलदायी रहता है। कारण बुध तृतीय भाव और द्वादश भाव का स्वामी होता है। सिंह लग्न के लिये बुध धन एवं लाभ स्थान का स्वामी होता है। अतः अत्यन्त धन दायक होता है। कन्या लग्न के लिए बुध लग्न एवं दशम भाव का स्वामी होता है अतः केन्द्र एवं त्रिकोण का स्वामी होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलदायक होकर अपनी दशा एवं अन्तर्दशा में सभी प्रकार की सुख सुविधा देता है। तुला लग्न के लिए बुध यद्यपि द्वादश भाव का स्वामी है। लेकिन भाग्येश होकर प्रबल

शेष पेज 18 पर.....



बच्चों पर अनावश्यक बोझ न डालें

डॉ. अरविन्द मिश्र

ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

हमारे देश में बच्चे थोड़े बड़े होते ही स्कूल जाने लगते हैं और उनके साथ जाता है उनका स्कूल बैग, जिसमें उनकी कॉपी, किताबें, खाने का टिफिन और पीने के लिए वाटर बैग होता है। चूंकि बच्चों का पांच से छः घंटे का समय स्कूल में व्यतीत होता है, इसलिए अपनी जरूरत के हर सामान व कापी किताबों को वे अपने बैग में भर लेते हैं और इस तरह उनका बैग काफी भारी हो जाता है जो स्कूल जितना उच्च स्तर का होता है उसकी एक्टिविटी गति विधि भी उतनी ही अधिक होती है और आज के विद्यार्थी हर चीज में संवय को प्रवीण करना चाहते हैं। इसलिए सभी एक्टिविटी में भागीदारी करने का सामान भी अपने साथ लेकर चलते हैं और इस तरह बचपन से ही भारी स्कूल बैग को उठाने लगते हैं।

लेकिन स्कूल बैग ज्यादा भारी होने से लाइलाज कमर दर्द व कंधों के दर्द का कारण बन सकते हैं। कम उम्र में बच्चों की कमर व कंधे इतने मजबूत नहीं होते हैं कि वे भारी सामान को अधिक देर तक अपने कंधों पर लादे रह सकें या हाथों में उठाएं।

स्कूल के शिक्षकों का भी इस ओर ध्यान नहीं जाता है कि विद्यार्थियों का स्कूल बैग दिनोदिन कितना बढ़ता जा रहा है उन्हें तो अपनी गतिविधियों को निरंतर पूरा करने की फिक्र मात्र होती है। वे किसी भी तरह बच्चों को स्वतंत्र नहीं छोड़ना चाहते हैं। उन्हें लगातार अधिक और अधिक व्यस्त रखना चाहते हैं, उन्हें अधिक होम वर्क दिया जाता

है ताकि वे अपने खाली समय का उपयोग घर में होम वर्क करने में लगायें घूमने फिरने में नहीं। विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए इतना जोर दिया जाता है कि कई विद्यार्थियों के मन में पढाई करने के प्रति उदासीनता पैदा हो जाती है। वे पढाई करने के नाम से ही दूर भागने लगते हैं और सोचते हैं कि काश पढाई न करनी पड़ती।

स्कूल बैग का भारी होना एक समस्या है और बच्चों पर पढाई करने का दबाव दूसरी समस्या है। ये दोनों ही समस्याएँ बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास करने के स्थान पर उनके अंदर शारीरिक व मानसिक समस्याएँ पैदा कर रही हैं। भारी बैग उठाने से बच्चों की रीढ़ की हड्डी पर बुरा प्रभाव पड़ता है और अधिक भार उठाने से उनकी रीढ़ की हड्डी का कर्व प्रभाव प्रभावित होता है।

डाक्टरों का कहना है कि ब्रिटेन में 14 साल की उम्र के आधे बच्चे रीढ़ की हड्डी के दर्द से पीड़ित हैं ब्रिटेन में बच्चे का स्कूल बैग किताबों, लैपटॉप, लंच और खेलने का सामान के कारण बहुत भारी हो जाता है जिसके कारण उन्हें कमर दर्द, रीढ़ की हड्डी में दर्द की शिकायत जल्दी होती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार यदि बच्चे अपने वजन का 15 फीसदी बजन रोजाना कंधों पर

उठाएंगे तो उन्हें लाइलाज कमर दर्द हो सकता है। संस्था बैंक केयर के अनुसार ब्रिटेन में बच्चे अपने 20 से 25 फीसदी तक बजन स्कूल बैग के रूप में उठा रहे हैं। एक सर्वे के अनुसार ब्रिटेन में एक बच्चा रोजाना 12से 7 किलो तक का बजनी स्कूल बैग उठा रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार कुछ बच्चे एक ही कंधे पर स्कूल बैग टांग लेते हैं। इससे इन बच्चों की रीढ़ की हड्डी पर दबाव अधिक पड़ता है और उनकी रीढ़ की हड्डी को अधिक चोट पहुंचने की आशंका रहती है। खेलकूद में भाग लेने वाले बच्चे अपने स्पोर्ट्स किट को साथ लेकर आते हैं जिससे उनके स्कूल बैग का बोझ और बढ़ जाता है। इससे यह होता है कि खेलकूद या संगीत के वाद्ययंत्र लेकर आने वाले बच्चे अपने कुल बजन का एक चौथाई बजन उठाते हैं। इस तरह एक चौथाई बजन वयस्कों के उठाने के लिए भी स्वीकार्य नहीं है।

हालांकि ये शोध आंकड़े ब्रिटेन में किये गए अध्ययन से प्राप्त हैं। हमारे देश में अभी बच्चों की स्थिति देखने को नहीं मिली है। बच्चों अपना पढाई का ज्यादा सामान तो लेकर चलते हैं। लेकिन लैपटॉप जैसी चीजे बच्चे नहीं लेकर जाते लेकिन अब जमाना लैपटॉप टेबलेट जैसी चीजों का आ गया है। ऐसे में अपने सामान में उन्हें शामिल कर लें तो कोई बड़ी बात नहीं होगी। ऐसी

स्थिति में जरूरत है स्कूल के प्राध्यापकों, शिक्षकों व बच्चों के माता पिता की सतर्कता की वे बच्चों को उतना ही सामान ले जाने दें जितना वे सहजता से उठा सकें। शिक्षकों को इस ओर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है कि वे बच्चों पर पढाई का बोझ व किताबों का बोझ न लादें, उन्हें थोड़ा होमवर्क देने के साथ साथ ऐसे कार्य करने के लिए दें जिससे वे व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त कर सकें जैसे चिन्हों के माध्यम से बच्चों को शिक्षण देना, उन्हें अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाना, उन्हें खेल खेल में व्यावहारिक बातें सिखाना आदि। कमर दर्द एवं कंधों के दर्द की समस्या अब केवल बच्चों में ही नहीं युवाओं में भी देखने को मिल रही है। कभी ये समस्याएँ वृद्धावस्था में आती थीं लेकिन अब गरदन में जकड़न, कंधों में दर्द, कमर दर्द, पैरों में दर्द आदि शारीरिक समस्याएँ बड़ी संख्या में शहर के युवा वर्ग में देखने को मिल रही हैं। इसका कारण कार्यस्थलों पर दिनभर बैठकर काम करते रहना, शारीरिक मेहनत में कमी, उठने बैठने का गलत तरीका, एक अवस्था में देर तक काम करना या गलत ढंग से व्यायाम करना आदि हैं। अधिक बाइक चलाने या कार ड्राइविंग के कारण भी

शेष पेज 17 पर.....

ज्योतिष, वास्तुशास्त्र एवं अंकशास्त्र

सीखना हुआ अब बहुत ही आसान।

सीखें अब मात्र 3 महीने में।

बैच जुलाई 2015 से प्रारम्भ

(केवल शनिवार एवं इतवार)

फोन न. 9719666777, 9557775262



रुद्राक्ष: दैवीय शक्ति का प्रतीक है।

पवन कुमार मेहरोत्रा

ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

रुद्राक्ष का न सिर्फ चिकित्सकीय बल्कि धार्मिक महत्व भी है। प्रकृति प्रदत्त रुद्राक्ष का एक दाना भी फायदेमंद होता है और उसकी माला भी अनेक मनोरथों को सिद्ध करती है। शुभ मुहूर्त में उचित विधि से अभिमंत्रित रुद्राक्ष धारण करने से इसका अधिक लाभ मिलता है।

प्राण मानव शरीर में शक्ति एवं चेतना का संचार करता है। व्यवधान उपस्थित होने वे विपत्तिकर समय में रुद्राक्ष एक दैनिक महाऔषधि के रूप में प्राणदायिनी शक्ति बन कर शरीर को निरोग अर्थात् स्वस्थ बनाती है।

रुद्राक्ष की क्षमता एवं प्रभाव उसके मुख शुद्धता एवम् धारण विधि पर निर्भर करते हैं। पुराणादि धार्मिक ग्रंथों में विभिन्न कामनाओं, अभीष्ट प्राप्ति एवं स्वास्थ्य लाभ हेतु अलग अलग मुखों के रुद्राक्ष धारण करने का उल्लेख प्राप्त होता है।

सामान्यतः रुद्राक्ष की दो प्रजातियां हैं रुद्राक्ष और भद्राक्ष। जिस रुद्राक्ष में प्राकृतिक छिद्र है। वह उत्तमकोटि का माना जाता है। सामान्यतः रुद्राक्ष चार रंगों का पाया जाता है। सफेद, काला, पीला और संयुक्त जो एक से चौदह मुखी तक होता है। एक मुखी शिव, दो मुखी— शिवपार्वती, तीन मुखी— अग्नि, चारमुखी— ब्रह्मा, पंचमुखी— पंचदेव, छ मुखी— कार्तिकेय, सातमुखी— अनंत, अष्टमुखी— बिनायक, नौमुखी— नवदुर्गा एवं भैरव, दसमुखी— विष्णु, ग्यारह मुखी— एकादश रुद्राक्ष, बारहमुखी— महाविष्णु, तेरह मुखी— इंद्र, एवं चौदहमुखी— रुद्र स्वरूप माने गये हैं। उपयुक्त रुद्राक्षों में एक दस, और चौदह मुखी विशेष फलदायी बताये गये हैं। एकमुखी रुद्राक्ष अत्यंत दुर्लभ है। यह तंत्र साधना एवम् कुंडली जागरण करने का अद्भुत साधन है।

एकमुखी रुद्राक्ष - सर्वमनोकामनापूर्ति के लिये।

दोमुखी रुद्राक्ष - कुंडलिनी जागरण एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिये।

तीन मुखी रुद्राक्ष- शरीर में शक्ति प्राप्ति के लिये।

चार मुखी रुद्राक्ष- विद्या एवम् आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के

लिये।

पांच मुखी रुद्राक्ष - पापदोष निवारण के लिये।

छ:मुखी रुद्राक्ष - लक्ष्मी प्राप्ति के लिये।

सात मुखी रुद्राक्ष - आरोग्य के लिये।

अष्टमुखी रुद्राक्ष - तंत्रोक्त निवारण के लिये।

नौमुखी रुद्राक्ष - नवदुर्गा की कृपा के लिये।

दसमुखी रुद्राक्ष - ग्रह दोष निवारण के लिये।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष - सौभाग्य प्राप्ति के लिये।

बारह मुखी रुद्राक्ष - सूर्य देव की प्रसन्नता के लिये।

तेरह मुखी रुद्राक्ष - पूर्ण पौरुषता की प्राप्ति के लिये।

चौदह मुखी रुद्राक्ष- सर्वव्याधि समाप्ति के लिये।

रुद्राक्ष स्वच्छ, असली एवम् प्राण प्रतिष्ठा के बाद धारण करे। उसके नियमों का पालन करें, जिससे शिवकृपा की प्राप्ति हो।

रुद्राक्ष की उपयोगिता- रुद्राक्ष हृदय को स्वच्छ, मन को शांत तथा दिमाग को शीतल रखता है। दीर्घ आयु एवं स्वास्थ्य प्रदान करता है। रुद्राक्ष धारण करने पर व्यक्ति को भूत प्रेत आदि कभी भी परेशान नहीं करते हैं। रुद्राक्ष बात, कफ तथा अन्य रोगों का शमन करता है। रक्त का शोधन करता है। रुद्राक्ष के दानों को रात को ताबों के बर्तन में जल भरकर उसमें डाल दें। सुबह दानों को निकाल कर खाली पेट उस जल को पीने से हृदय रोगी तथा कब्ज आदि में लाभ मिलता है। रुद्राक्ष के दाने दूध में उबाल कर पीने से स्मरण शक्ति का विकास होता है और खासी में भी आराम मिलता है।

उच्च रक्तचाप के लिये तो रुद्राक्ष की माला वरदान स्वरूप है इसके लिये आवश्यक है कि रुद्राक्ष के दाने रोगी के हृदय स्थल को स्पर्श करते रहे। रुद्राक्ष धारण करने में विधि एवम् मुहूर्त का विशेष महत्व है। शुभ मुहूर्त में उपयुक्त विधि से अभिमंत्रित रुद्राक्ष धारण करने से धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति के साथ ही आयु आरोग्य एवम् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये

प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा

भविष्य दर्शन[®]

ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लेक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड,

आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777

ई मेल : mail@bhavishydarshan.in



परिवार में सुख समृद्धि के उपाय

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि,
वास्तु ऋषि, अंक विशारद

दोस्तों शादी दो आत्माओं का मिलन है इस पवित्र बधन में स्त्री और पुरुष अपने अपने धर्म, समाज को साक्षी मानकर जीवन भर साथ निभाने के लिए बंधते हैं इसमें किसी भी प्रकार का अवरोध ना केवल उन दोनों के लिए ही वरन उनके पूरे परिवार के लिए भी दुखद साबित होता है। इस संसार में हर व्यक्ति चाहता है कि उसका दाम्पत्य जीवन बहुत ही सफल हो, पति पत्नी के मध्य बहुत ही मधुर सम्बन्ध बने रहे और हर मनुष्य के घर में उस परिवार के सभी सदस्यों के बीच प्रेम और आपसी सौहार्द चिरकाल तक विद्यमान रहे, लेकिन आज की भागदौड़ कड़ी प्रतिस्पर्धा भरी जिन्दगी में संबंधों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है परिवार बिखर रहे हैं और जो साथ भी है उनमें कहीं न कहीं अहम् का भाव हावी होता जा रहा है। घर में माता पिता बड़े बुजुर्गों को उचित मान सम्मान नहीं मिल पा रहा है और यह सत्य है कि यदि पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं है, परिवार के सदस्यों में मतभेद है, कलह है तो व्यक्ति हमेशा मानसिक रूप से अशान्त ही रहेगा। पारिवारिक सुख के आभाव में उसका हर सुख अधूरा ही रहेगा। हम यहाँ पर कुछ ऐसे महत्वपूर्ण नियम उपाय बता रहे हैं जिनका पालन करके हमारे परिवार हमारे दाम्पत्य जीवन में अवश्य ही खुशियाँ भरी रहेंगी।

1. कन्या के सुखी वैवाहिक जीवन के लिए विवाह के पश्चात् जब कन्या की विदाई होने वाली हो तो किसी पीले रंग के धातु के लोटे में गंगाजल लेकर उसमें थोड़ी सी पिसी हल्दी मिलाएँ फिर एक तांबे का सिक्का उस लोटे में डालकर कन्या के ऊपर से 7 बार उतार कर उसके आगे गिरा दें, कन्या का वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

2. यदि कन्या विवाह के चार दिन पूर्व साबुत हल्दी की 7 गांठें, पीतल के 3 सिक्के, थोड़ा सा केसर, गुड और चने की दाल इन सबको एक पीले वस्त्र में बांधकर अपनी ससुराल की दिशा में उछाल दें तो उसको अपने पति और ससुराल के अन्य सभी सदस्यों का सदैव भरपूर प्यार मिलेगा।

3. यदि कोई कन्या विदाई के बाद अपने ससुराल में प्रवेश करने से पहले चुपचाप मेंहदी में मिले हुए साबुत उडद गिरा दें और फिर प्रवेश करें तो उसका दाम्पत्य जीवन सदा सुखमय रहेगा, उसकी अपने पति और ससुराल के अन्य सदस्यों से सदैव अच्छे सम्बन्ध बने रहेंगे।

4. घर में रोज या सप्ताह में एक बार नमक मिले पानी का पोछा अवश्य लगवाये।

5. यदि घर में पत्नी अपने हाथों में कम से कम 2 सोने की या पीली चूड़ी पहने तो दाम्पत्य जीवन में प्रेम और घर में सुख बना रहता है।

6. जहाँ तक संभव हो मंगलवार, बृहस्पतिवार और शनिवार को घर का कोई भी सदस्य न तो नाखून, बाल कोटें, और ना ही शोब बनायें, इसके अतिरिक्त बृहस्पतिवार और शनिवार को घर में कपड़े भी न धोएँ, नहाते हुए सर को गीला न करें और वालों में तेल भी

कतई ना लगायें।

7. यदि व्यक्ति सुबह नाश्ते में पत्नी या माँ के द्वारा केसर मिश्रित दूध का सेवन करें और काम में जाते समय नियमपूर्वक उनके हाथ से जबान में केसर लगाये और थोड़ी सी चीनी खाए तो घर में सदैव सुख शांति और आर्थिक समृद्धि बनी रहती है।

8. यदि घर में क्लेश रहता है घर के सदस्यों में मतभेद रहते हैं तो घर में आटा शनिवार को ही पिसवाएँ या खरीदे और साथ ही 100 ग्राम पिसे काले चने भी लें जो उस आटे में मिला दें। जल्दी ही स्थिति में सुधार होते हुए देखेंगे।

9. जब भी घर में खाने पीने की कोई वस्तु आयें तो सबसे पहले भगवान को भोग लगायें फिर घर के बड़े बुजुर्गों और बच्चों को देकर ही पति पत्नी उस वस्तु का सेवन करें, यह बहुत ही चमत्कारी और परखा हुए उपाय है। बुजुर्गों के आशीषों और बच्चों की खुशियों से घर में सर्वत्र हर्ष, शुभता का वातावरण बनेगा और उस घर में कभी भी अन्न और धन की कमी नहीं रहेगी।

10. दाम्पत्य जीवन में निरंतर प्रेम बनाये रखने के लिए पत्नी अपने पति द्वारा भोजन करने के बाद उसके बचे हुए भोजन में से निवाला अवश्य खाएँ किंतु अपने बचे भोजन में से उसे न खाने दें, ऐसा करने से पति हमेशा अपनी पत्नी से प्रेम करता रहेगा और कभी भी किसी और स्त्री की ओर आकर्षित नहीं होगा, ऐसा कम से कम सप्ताह में एक बार तो अवश्य ही करें।

11. यदि घर की स्त्री प्रतिदिन प्रातः उठते ही सर्वप्रथम मुख्य द्वार पर अपने इष्ट देव का नाम लेते हुए सुख और सौभाग्य की प्रार्थना करते हुए एक लोटा जल डालें तो उसका अपने पति से और उस घर के सभी सदस्यों का आपस में हमेशा प्रेम बना रहता है और उस घर का आर्थिक पक्ष भी हमेशा मजबूत रहेगा।

12. यदि पति पत्नी के बीच रोज ही झगड़ा होता है तो शयनकक्ष में रात में पति अपने तकिए के नीचे लाल सिंदूर और पत्नी अपने तकिए के नीचे कपूर की टिक्की रख दें। प्रातःकाल पति आधा सिंदूर घर में कहीं गिरा दें और आधा पत्नी की मांग में भर दें और पत्नी कपूर को घर के बाहर जला दें ऐसा किसी भी शुक्ल पक्ष में सोमवार से रविवार लगातार 7 दिनों तक और उसके बाद जहाँ तक संभव हो रोज करें अगर रोज न भी हो सके तो सोमवार और मंगलवार दो दिन अवश्य ही करने की कोशिश करें, दोनों के बीच का क्लेश खत्म हो जायेगा।

13. पत्नी तुलसी का पौधा लाकर घर में किसी ऊँचाई वाले स्थान पर लगायें। तुलसी जी को नित्य जल दें, सिन्दूर चढायें और संध्या के समय घी का दीपक जलाएँ। इससे अखण्ड सौभाग्य प्राप्त होगा और दाम्पत्य प्रेम भी बढ़ेगा।

14. यदि कोई स्त्री लाल सिन्दूर, इत्र की शीशी, चने की दाल तथा केसर का दान करें तो इससे उस स्त्री के सुहाग की आयु

शेष पेज 17 पर.....

लाल किताब की ज्योतिषीय उपयोगिता

पं. आर. एस. द्विवेदी
नजदीक हिमालय स्कूल
ललहेड़ी रोड़, खन्ना

मैंने प्राचीन ज्योतिष लाल किताब द्वारा भाग्य विश्लेषण नामक पुस्तक लिखी है जिसका प्रकाशन चन्डीगढ़ से हुआ है दुसरी पुस्तक लिखी है प्राचीन ज्योतिष लाल किताब और हस्तरेखा जिसका प्रकाशन अमित पाकेट जालन्धर से हुआ है। जब ज्ञान की बढ़ोत्तरी हुई तो उसी श्रंखला को आगे बढ़ाते हुए यह लेख लिख रहा हूँ।

देश के अन्दर कुछ ज्योतिष लाल किताब को मानते हैं। जबकि कुछ ज्योतिषी वैदिक ज्योतिष को मानते हैं लाल किताब को नहीं मानते हैं। लाल किताब कारक के ऊपर लिखी हुई पुस्तक है। लाल किताब ने राशियों से अधिक घरों को महत्व दिया है जैसे लाल किताब ने लगन को मेष राशि माना है। चाहे उसमें कोई भी राशि आती हो उसके पीछे यह तर्क है कि मनुष्य का सिर मेष राशि से प्रभावित होता है। लगन में कोई भी राशि उदय होती है। लेकिन लगन में बैठा ग्रह प्रथम घर मेष राशि से प्रभावित है जिसका कुछ ज्योतिषी विरोध करते हैं। लेकिन कुछ ज्योतिषी घरों को महत्व देते हैं कि लगन में बैठा ग्रह अपना प्रभाव देगा।

लाल किताब ने हर घर में ग्रहों का उपाय लिखा है मेरा मानना है। कि हर घर के उपाय की तभी जरूरत पडती है जब ग्रह शत्रु राशि में बैठा या शत्रु ग्रहों के प्रभाव में हो या ग्रह जहाँ पर बैठा हो उसके स्थान से ग्रह ऐसे स्थान पर बैठे हो जो ग्रह को खराब कर रहा हो इसमें भी ज्योतिषी में सामन्जस्य की अज्ञानता है इसलिए यहाँ पर लाल किताब में राशियों की तरफ इशारा किया है। प्राचीन ज्योतिष जहाँ पर भाव भावेयश एंव कारक पर विचार करती है लाल किताब वहाँ पर कारक पर अधिक जोर देते हैं मेरा मानना है कि कारक से फलादेश सही नहीं उतरेगा। क्योंकि भाव और भावेयश का प्रभाव भी 50 प्रतिशत होता है। इसलिये लाल किताब का फलादेश सही नहीं उतरता है। जबकि प्राचीन ज्योतिष से राशि नक्षत्र भावेश्य और नवांश कुण्डली का भी फल होता है इसलिये प्राचीन ज्योतिष अधिक सटीक फलादेश देती है। लेकिन उपाय में प्राचीन ज्योतिष उतना आसान तरीका नहीं बताती है प्राचीन ज्योतिष में अधिक पुजा पाठ है जो हिन्दू धर्म से संबन्धित है जबकि ज्योतिषी के पास सिख, मुसलमान और ईसाई भी जाते हैं। वे हिन्दू धर्मानुसार पूजा पाठ नहीं कर पायेंगे। लेकिन अगर उनको बताया जाये कि सूर्य को ठीक रखने के लिये पिता की सेवा करें पिता से अच्छा संबंध बनाकर रखें सूर्य सरकार का भी कारक है। इसलिए सूर्य को ठीक रखने के लिये सरकार के द्वारा बनाये नियम कानून का पालन करें तथा सरकार की मदद करें अगर सरकारी कर्मचारी है तब अपने अधिकारियों से अच्छा संबंध बनाकर रखें। जो व्यक्ति सूर्य ग्रह से प्रभावित रहता है या जिसकी कुण्डली में सूर्य लगन पंचम, नवम, दशम, या एकादश घर में बैठा है मित्र ग्रहों के साथ बैठा है ऐसे व्यक्ति का चरित्र चाल चलन अच्छा होता है सूर्य को अच्छाई का कारक माना गया है जब सूर्य अच्छे स्थान पर होता है। तब व्यक्ति ईमानदार और उदार होता

है।

जिस प्रकार सूर्य भगवान अपनी रोशनी के द्वारा और गर्मी के द्वारा सारी दुनियां का पालन करते हैं। उसी प्रकार अच्छा सूर्य वाला व्यक्ति दुनिया को कष्ट देता रहता है। दुनिया से लेता कम है। दुनिया को मदद और सहयोग देता है। हस्तरेखा के हिसाब से ऐसा व्यक्ति का अंगूठा नीचे से निकला होता है। अंगूठा लम्बा होता है। हाथ में सूर्य रेखा होती है। हाथ की चमड़ी गुलाबी चमकीली होती है। अब अगर किसी व्यक्ति का सूर्य कमजोर है तब उसके आंख में रोशनी की कमी रहगी पेट खराब रहेगा हडडी से संबंधित बीमारी होगी। अगर व्यक्ति अच्छा सूर्य वाला गुण अपना लेता है। फिर उसके हाथ में भी अंगूठा नीचे हो जायेगा तथा लम्बा होगा। जब अंगूठा इस प्रकार का होता है तब व्यक्ति के अन्दर महत्वाकांक्षा होती है। बर्दाश संतोश की शक्ति अच्छी होती है। गुस्से में आकर गली नहीं देता। जिस हाथ में सूर्य रेखा होता है उसके अन्दर ऐसा गुण हुनर होता है। जिसका हाथ गुलाबी होता है ऐसा व्यक्ति जिम्मेदार, मददगार और संवेदनशील होता है। दूसरे के दुख दर्द को समझने वाला होता है। सूर्य मेष राशि में केतु के अश्वनी नक्षत्र में उच्च होता है। जब सूर्य उच्च होता है तब व्यक्ति सबका सहयोग करके सबसे आशीर्वाद प्राप्त करता है। और वह व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। सप्तम घर अर्थात् तुला राशि में राहु के स्वाति नक्षत्र में जब सूर्य होता है तब व्यक्ति की आत्मा दूषित हो जाती है। तब मनुष्य छल कपट, चोरी बेईमानी, ठगी, धोखादड़ी का समान प्रयोग करता है या खाता पीता है तब उसकी आत्मा कुलषित दुषित हो जाती है व्यक्ति नर्क जाने का अपना रास्ता बना लेता है।

उसी प्रकार जन्मकुण्डली में चन्द्रमा मन का कारक माना गया है। अगर चन्द्रमा राहु केतु के साथ में या उसकी द्रष्टि में बैठा है या इन ग्रहों के नक्षत्र में बैठा है या बक्री ग्रह या अस्त ग्रह के राशि या नक्षत्र में बैठा है या छठे आठवें बारहवें घर के स्वामी राशि या नक्षत्र में बैठा है तब व्यक्ति का माता से विचार नहीं मिलता या माता का सुख नहीं मिलता है व्यक्ति सयमी नहीं होता है। व्यक्ति को अपने मन के ऊपर नियंत्रण नहीं होता है। अगर ऐसा जातक माता तथा माँ की उम्र की औरतों की सेवा करता है उससे अच्छा संबंध बनाकर रखता है। तब व्यक्ति को मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। अगर जातक अपनी माता का सेवा नहीं करता तब उसे मानसिक शान्ति नहीं प्राप्त होगी तथा व्यक्ति हमेशा बेचैन रहेगा चन्द्रमा को जल का कारक माना गया है कई लोगो को शुद्ध जल पीने को नहीं मिलता है जिनके कुण्डली में चन्द्रमा पीडित है उनको वृद्धा आश्रम में सेवा करनी चाहिये।

जन्मकुण्डली में कर्क राशि चौथा घर चन्द्रमा का घर होता है जब चन्द्रमा और चौथा घर पीडित होता है उसे समाज और परिवार का सहयोग नहीं प्राप्त होते हैं। अगर व्यक्ति परोपकार का काम करता

शेष पेज 19 पर.....



ग्रीष्मकालीन रोगों का ज्योतिषीय संबंध

डा. (श्रीमती) कविता बंसल

ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ

सम्पूर्ण भारत गर्मी की भीषण चपेट में है। गर्मी के कारण अनेक मौसमी रोग होते हैं। जैसे- लू लगना, डिहाईड्रेशन, दस्त, उल्टी, पेट में दर्द होना, ज्वर, फोड़े-फुंसी होना इत्यादि। ज्योतिष में मौसमी बिमारियाँ गोचर से देखी जाती हैं। परंतु जन्मकुंडली के आधार पर चल रही दशा अर्न्तदशा भी मौसमी बिमारियों का कारण हो सकती है। चूंकि षष्ठ भाव बिमारियों के बारे में बताता है। ग्रहो का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सम्बन्ध षष्ठ व अष्टम भाव से उक्त बीमारी की ओर सकेंत देता है।

लू लगना- लू लगने के ज्योतिषीय कारण निम्नलिखित हैं।

1. लग्न या चन्द्र कुंडली में सूर्य षष्ठ या अष्टम भाव में गोचर कर रहा हो अथवा उक्त भावों पर दृष्टि हो। 2. लग्न या चन्द्र कुंडली में चन्द्रमा गोचर में चतुर्थ, षष्ठ या अष्टम भाव में स्थित हों। 3. गोचर में मंगल का सम्बन्ध षष्ठ या अष्टम भाव से हो रहा हो तो भी लू लगने की सम्भावना रहती है। 4. जन्मकुंडली में सूर्य, मंगल यदि षष्ठ अष्टम या द्वादश भाव के स्वामी हो और वर्तमान में उनकी दशा अर्न्तर्दशा चल रही हो तो भी लू लगने की सम्भावना होती है। 5. जन्मकुंडली में जो ग्रह षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश है और उस ग्रह की दशा चल रही हो तो लू की सम्भावना होती है। 6. जन्मकुंडली में जो ग्रह सूर्य व मंगल के नक्षत्र में स्थित है और वह 6,8, या 12 वे भाव का कारक है या इन भावों से सम्बन्ध बना रहा हो तो उस ग्रह की दशा अर्न्तर्दशा में लू लगने की सम्भावना रहती है। 7. मारकेश की दशा अर्न्तर्दशा में लू लगने की सम्भावना रहती है। 8. लग्नेश गोचर में यदि षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो।

डिहाइड्रेशन- शरीर में किन्ही कारणों से जब पानी की कमी हो जाती है। तो व्यक्ति डिहाइड्रेशन का शिकार हो जाता है। चन्द्रमा जल का कारक होता है। इस मौसमी बीमारी के निम्नलिखित ज्योतिषीय कारण हो सकते हैं।

1. गोचर में चन्द्रमा या चन्द्रकुंडली की दृष्टि से षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो। 2. गोचर में चन्द्रमा लग्नकुंडली के षष्ठेश या अष्टमेश से युति सम्बन्ध राशि परिवर्तन सम्बन्ध बना रहा हो। 3. आपकी लग्न कुंडली में गोचर में चन्द्रमा शनि अथवा राहु से युक्त अथवा दृष्ट हो। 4. कर्क लग्न वाले अथवा कर्क राशि वाले व्यक्तियों के लिये चन्द्रमा यदि गोचर में धनु अथवा कुंभ राशि में हो तो डिहाइड्रेशन की सम्भावना रहती है। 5. जन्मकुंडली में यदि मारकेश चन्द्रमा हो तो अपनी दशा अर्न्तर्दशा में डिहाइड्रेशन करवा सकता है। 6. यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश अष्टमेश या मारकेश की दशा चल रही है और गोचर में चन्द्रमा अशुभ भावों में गोचर कर रहा है तो डिहाइड्रेशन हो सकता है।

दस्त लगना- गर्मियों में दस्त लगना आम बीमारी है। यह रोग मुख्यतः फूड प्वाइजनिंग से होता है। लू लगने एवं डिहाइड्रेशन में जो ज्योतिषीय कारण वर्णित हैं उनमें से अधिकतर कारण दस्त लगने पर भी लागू होते हैं क्योंकि उक्त तीनों बिमारियाँ परस्पर सम्बंधित हैं।

इस रोग के प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्न हैं।

1. गोचर में षष्ठेश षष्ठ या सप्तम भाव में गोचर कर रहा हो दस्त लगने की सम्भावना रहती है। 2. गोचर में शनि राहु अथवा सूर्य जन्मकुंडली के छठें एवं सातवें भाव में गोचर कर रहे हों। 3. गोचर में लग्नेश का सम्बन्ध षष्ठ या अष्टम भाव या भावेशो से हो रहा हो साथ ही शनि अथवा राहु से संबंध हो रहा हो तो दस्त लगने की सम्भावना रहती है। 4. शनि, राहु या चन्द्रमा का संबंध 6,7 अथवा 8 वें भावों से हो रहा हो तो उनकी दशा अर्न्तर्दशा में दस्त लगने की सम्भावना रहती है।

उल्टी व पेट में दर्द होना- गर्मियों में उल्टी व पेट दर्द की शिकायत काफी होती है। यह मौसमी रोग लू लगने अथवा फूड प्वायजनिंग के कारण होता है और इसका परिणाम डिहाइड्रेशन तक पहुंच जाता है अतः लू लगने, डिहाइड्रेशन एवं दस्त लगने से सम्बन्धित ज्योतिषीय कारण उल्टी व पेट दर्द पर भी लागू होते हैं।

ज्वर- ज्वर प्रायः सभी मौसमों की बीमारी है। ज्वर के प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्न हैं।

1. लग्न अथवा चन्द्र कुंडली में सूर्य गोचर में 6,8 अथवा 12 वें भाव में गोचर कर रहा हो। 2. गोचर में कुंडली के षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश का संबंध सूर्य से हो रहा हो तो ज्वर की संभावना रहती है। 3. लग्न कुंडली में सूर्य का संबंध षष्ठ भाव, अष्टम भाव अथवा द्वादश भाव या भावेशों से हो रहा हो और चन्द्रमा गोचर में 4,6,8 तथा 12 वें भाव में गोचर कर रहा हो तो ज्वर आने की सम्भावना रहती है। 4. लग्न कुंडली में लग्नेश का संबंध सूर्य से हो रहा हो और गोचर में लग्नेश नीच राशि में गोचर हो या लग्न कुंडली, चन्द्रकुंडली के 6,8,12 वे भाव में गोचर हो तो ज्वर आ सकता है। 5. मारकेश अथवा षष्ठेश अष्टमेश की दशा- अर्न्तर्दशा हो तो ज्वर की संभावना रहती है। 6. लग्न कुंडली में सूर्य अशुभ स्थिति में हो तो सूर्य के नक्षत्रों में स्थित ग्रहों की दशा अर्न्तर्दशा में ज्वर आने की संभावना रहती है। 7. षष्ठेश या अष्टमेश गोचर में लग्न या चन्द्र कुंडली के प्रथम भाव में स्थित हो।

फोड़े फुंसी होना- गर्मियों में फोड़े फुंसी की शिकायत आम रहती है। इसके प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्न हैं।

1. लग्न या चन्द्रकुंडली की दृष्टि में मंगल, सूर्य अथवा राहु 6,8,12 वे भाव में गोचरस्थ हो। 2. गोचर में लग्न कुंडली के षष्ठेश अथवा अष्टमेश का संबंध मंगल राहु अथवा शनि से हो रहा हो। 3. जन्मकुंडली में लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अथवा अष्टम स्थान में मंगल हो और उसका संबंध सूर्य से बन रहा हो तो मंगल अथवा सूर्य की दशा अर्न्तर्दशा में फोड़े फुंसी होने की संभावना रहती है।

उक्त बिमारियों के ज्योतिषीय कारणों को जानकर ही उपाय निश्चित किया जाता है। सामान्यतः इन रोगों से बचने के लिये साधारण सावधानियां वरतना जरूरी है। हमेशा गर्मी से बचने के लिये पेय पदार्थों का सेवन करें। धूप व लू से बचने के लिये छाता, चश्मा, पतले कपड़े, का उपयोग करें।



गिरना नहीं हूँ, गिरकर संभलना है जिन्दगी

सुरेश अग्रवाल
आगरा

यानी विपरीत हालात में भी हम अपना संयम बनाए रखें और संतुलित व्यवहार भी। किसी भी इंसान की असली परीक्षा कठिन समय में ही होती है। जब सब कुछ ठीक ठाक चल रहा हो, तब तो कोई भी खड़ा रह सकता है। संयम ही हमें हर मुकाबले में खड़े रहने की हिम्मत देता है और हमारे व्यक्तित्व को निखारता है।

सवाल सिर्फ किसी प्रतिस्पर्धा में हारने का नहीं है। बल्कि उस मुश्किल से बाहर निकलने का है। विषम परिस्थितियों में हम अपना संयम या आत्मविश्वास खोयेंगे, तो उस मुश्किल का विश्लेषण नहीं कर पायेंगे। संयम का संस्कार हमें, खुद को बदलने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

हार किसी चीज का अन्त नहीं होती। हम कई बार उस हार से इतने निराश हो जाते हैं मानों सब कुछ खत्म हो गया हो। जिस तरह प्रतिस्पर्धा हमारे जीवन का एक अंग है, उसी तरह से सफलता और विफलता भी साथ साथ खड़ी दिखाई देती है। हमारी सबसे बड़ी परीक्षा विफलता के बाद शुरू होती है। तब पता चलता है कि हम कितने मजबूत हैं और कितनी जल्दी उस निराशा को पार कर आगे बढ़ सकते हैं। इस तरह विफलता हमें और भी मजबूत होने और नई शुरुआत करने का रास्ता दिखाती है। लेकिन यह तब ही सम्भव है जब हम संयमित और धैर्यवान रहें और अपनी कमियों और गलतियों की तलाश करें, तब ही तो हम उन्हें दूर करने की कोशिश कर पायेंगे। इसके लिए हमें अपना उतावलापन कम करना होगा।

संयम केवल मुश्किल समय में ही जरूरी नहीं होता। वह चरम खुशी या उत्साह के क्षणों में भी आवश्यक होता है। संयम हमें विनम्र बनाता है। जीत या सफलता में हमें कभी भी अंहकारी नहीं होना चाहिए संयम और विनम्रता हमारी सफलता को गरिमा प्रदान करती है, जबकि अंहकार घमण्ड पैदा करता है। कामयाबी प्राप्त होने के बाद हम बड़बोले भी हो जाते हैं और दूसरों का अपमान करने लगते हैं। संयम हमें ऐसा करने से रोकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम जीत व हार दोनों में ही समभाव रखें। हमारे जीवन में कई बार ऐसे अप्रिय अवसर आ सकते हैं जब हम अपने तय किए हुए कार्यों को पूरा न कर पायें। ऐसे मौकों पर खुद पर खीझ होना स्वाभाविक है। अतः उस समय हमें खुद का मूल्यांकन करना चाहिए ताकि काम करने की शैली में उचित बदलाव कर सकें। यह भी विचार करें कि हम जिस योजना में अपना श्रम और समय लगा रहे हैं वह हमारी क्षमता के अनुकूल है या नहीं।

क्रोध पर नियंत्रण, प्रतिस्पर्धा का सामना और धैर्य इन सबका आपस में गहरा संबंध है। स्वयं को तनाव मुक्त रखना ही सफलता की राह का निर्माण करना है। ये सारे तत्व मिलकर ही हमारे

प्याज लू का अचूक नुस्खा है

दत्तात्रेय शर्मा आचार्य
आगरा

रसोई में प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले मिर्च, मसाले, हींग, जीरा, नमक, हल्दी, अदरक, लहसुन, प्याज आदि सभी गुणकारी औषधियाँ हैं। मौसम के अनुसार हमें इनके प्रयोग में उचित और अनुचित का ध्यान रखना चाहिए। यदि अधिक प्याज, लहसुन, मिर्च, मसालों से बनी सब्जियां प्रयोग की जायें तो वे मानसिक ऊर्जा उत्पन्न करती है।

प्याज गर्मियों में लू से बचाता है। यहाँ प्रस्तुत है प्याज से जुड़े कुछ घरेलु उपचार—

1. लू लगने पर दो चम्मच प्याज का रस पीड़ित व्यक्ति को पिलाएं। साथ ही प्याज के रस को कनपटी और छाती पर मलें। यदि कटे हुए प्याज को जेब में रख कर घर से निकलेंगे तो लू नहीं लगेगी।

2. पन्द्रह ग्राम प्याज के रस में एक ग्राम शहद और एक ग्राम सोंठ मिलाकर पीने से कफ निकल जाता है। यह प्रयोग अस्थमा के रोगियों के लिए भी लाभदायक है। प्याज के रस को गर्म करके पीने से भी कफ निकलता है।

3. पेशाब खुलकर नहीं आ रहा हो तो सफेद प्याज के 5-10 ग्राम रस में शहद मिलाकर रोगी को पिलाएं। पेशाब खुलकर आयेगा। अगर प्याज को पानी में उबालकर उस पानी का सेवन कराया जाये तो मूत्र संबंधी रोग ठीक हो जायेंगे।

4. नकसीर रोकने के लिए प्याज की कुछ बूंदें नाक में डालें, तुरन्त आराम होगा।

5. हैजे में उल्टी और दस्त रोकने के लिए प्याज के रस में काला नमक डाल कर पिलाएं, लाभ होगा।

6. अजीर्ण दूर करने के लिए प्याज के छोटे छोटे टुकड़े कर उसमें थोड़ा नीबू का रस और सिरका मिलाकर भोजन के साथ सेवन करने से लाभ होगा।

7. रक्त विकार में 50 ग्राम प्याज का रस 10 ग्राम मिश्री व एक ग्राम सफेद जीरा भून कर और मिलाकर पिलाने से तत्काल लाभ होता है।

8. जुकाम से परेशान हैं तो प्याज का रस सूंघें, राहत मिलेगी।

व्यक्तित्व के आधार स्तम्भ है। मजबूत और प्रभावशाली व्यक्तित्व ही समाज को नेतृत्व प्रदान कर सकता है। अच्छा दिखना अच्छा पहनावा और स्वस्थ शरीर एक टीम लीडर के लिए आवश्यक तो है लेकिन इन सबके साथ साथ सकारात्मक व्यवहार, कुशलता, ज्ञान, भाषा प्रवाह, संवाद शैली और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता उसके व्यक्तित्व को निखार कर समाज में स्थापित करते हैं।



श्रावण मास में शिव पूजा

श्री भगवान पाराशर
कर्मकाण्ड भास्कर

**आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपमो गिरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदस्त्रिंशत् शम्भो तवाराधनम्॥**

ज्योतिषशास्त्र को वेद के नेत्र की संज्ञा दी है ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हिन्दी महिनों में किसी न किसी नक्षत्र की प्रधानता से उस मास का नाम करण होता है जैसे विशाखा नक्षत्र की प्रधानता से इस माह का नाम वैशाख रखा गया। चित्रा नक्षत्र की प्रधानता से चैत्र मास बना ठीक उसी प्रकार से श्रावण मास पुकारा गया। सनातन रीति के अनुसार श्रावण के अधिपति विष्णु हैं और विष्णु हमेशा शंकर में रमण करते हैं इसलिए ये मास शिव को समर्पित मास माना गया है। शिवरात्रि और श्रावण मास शिव को अतिप्रिय है इसलिए सावन का महीना प्रारंभ होते ही भगवान शंकर के जयकारे गली गली गूँजने लगते हैं। इस माह के प्रारंभ होते ही शिव भक्त सबेरे-2 जल का लोटा तथा विल्व पत्रों के साथ शिव मंदिर जाते हैं। पूजा अर्चना करके माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाते हैं इस पूजा में महिलाएं भी पुरुषों से पीछे नहीं रहती छोटे छोटे बालक बालिकाएं विद्या प्राप्त हेतु युवतियां मनोकूल वर प्राप्त हेतु और सौभाग्यवती स्त्रियां अपने पति तथा संतानों की मंगल कामना करती हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष शिवमय हो जाता है।

भगवान शिवजी की कृपा से आगरा शहर में भगवान शंकर के चार प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर हैं। इन मंदिरों पर क्रमशः मेले हर सोमवार को लगते हैं। सावन के प्रथम सोमवार का मेला राजेश्वर मंदिर पर लगता है दूसरे सोमवार को शिव भक्त सम्पूर्ण आगरे की परिक्रमा लगाते हैं तथा बल्केश्वर मंदिर पर मेला लगता है। बल्केश्वर मंदिर का शुद्ध नाम बल्केश्वर महादेव है क्योंकि यहां पर बेल पत्रों के पेड़ों का बहुत बड़ा बाग था यहां पर शिवजी स्वयं प्रकट हुए थे। सावन के तीसरे सोमवार का मेला कैलाश महादेव पर लगता है। यहाँ पर श्याम कुटी और जैशिव बाबा की गुफा है। श्रावण मास के चौथे सोमवार का मेला पृथ्वीनाथ महादेव पर लगता है। इस मंदिर का निर्माण स्वयं राजा पृथ्वीनाथ चौहान ने कराया था। महादेव जी ने इस प्रकार आगरा निवासियों पर विशेष कृपा की है माता पार्वती के अतिरिक्त गंगा और मांग को भी शिवजी की पत्नि कहा गया है।

**गंग-मंग दो बहिन है, सदा रहत शिव संग।
जीवत तारण मंग है, तो मुदी तारत गंग॥**

शिव का अर्थ होता है कल्याणकारी इसलिए शिव अर्चना सभी भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती है। श्रावण मास में शिव पूजन विशेष लाभकारी होता है तथा इसमें पडने वाले सोमबारों को शिव पूजन सभी सुख सौभाग्य प्रदान करने वाला होता है अतः सभी भक्तगण इस दिन लंबी लाइन लगाकर हाथ में जल अथवा दुग्ध से भरे पात्रों को लेकर धतूरा, बिल्व पत्र व फल, मदार पुष्प आदि लेकर शिव मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं तथा कई शिव भक्त अपनी अमुक- अमुक कामना अनुसार पृथक पृथक शिवलिंगों पर अलग अलग द्रव्यों से रुद्राभिषेक करवाते हैं विशेष रूप से स्फटिक, पारद, पार्थिव शिवलिंग,



वरुण मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

पंच तत्वों में एक तत्व जल है जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है। हमारी पूरी पृथ्वी पर एवं हमारे शरीर में ऐसा माना जाता है 75 प्रतिशत जल है व 25 प्रतिशत पृथ्वी अथवा हड्डि मास आदि अतः इस तत्व की अधिकता होने के कारण इसका महत्व भी बढ़ जाता है शरीर में जल तत्व की वृद्धि होने पर जलोदर, सूजन आदि रोग हो जाते हैं तथा जल की कमी होने पर डिहाइड्रेशन, रक्त विकार आदि रोग हो जाते हैं इस लेख में हम जिस मुद्रा का वर्णन कर रहे हैं वह मुद्रा वरुण मुद्रा है। यह मुद्रा सिर्फ जल तत्व की कमी को पूरा करने के लिए प्रयोग में लायी जाती है। अतः जिन्हें जलोदर आदि रोग हों मधुमेह हो तथा जल तत्व की वृद्धि हो वह इस मुद्रा को न करें।

विधि- वरुण मुद्रा को करने के लिए सुबह या शाम शुद्ध चिंत व शांत स्वभाव होकर सुखासन, पद्मासन आदि किसी भी आसन में बैठ के अंगुष्ठ से कनिष्ठिका उंगली का स्वभाव स्पर्श करें दोनो हाथों को घुटनों पर रखें तथा लंबी गहरी सांसे धीरे-धीरे लें व छोड़ें यह मुद्रा लंबे समय के लिए न करें। पांच सात मिनट प्रतिदिन करें अंगर लघुशंका अत्यधिक व बार बार आने लगे तो यह मुद्रा करना बंद कर दें।

लाभ- वरुण मुद्रा के नियमित अभ्यास से शरीर में सुंदरता बढ़ती है। तथा शरीर कांतिमय व तेजयुक्त हो जाता है। त्वचा का रूखापन तथा अन्य चर्म रोग कील मुहासों, सख्त त्वचा आदि में लाभ मिलता है दस्त, डिहाइड्रेशन, तथा शरीर में खिचाव से हुए दर्द में भी इस मुद्रा से लाभ मिलता है। तथा अग्नि तत्व का विकार संतुलित रहता है। अतः क्रोध, चिन्ता, जठराग्नि आदि में भी लाभ मिलता है।

एवं नर्वदेश्वर शिवलिंग का पूजन अधिक मात्रा में भक्तगण करवाते हैं। शिवलिंग अनेकों प्रकार की होती है। परंतु इन सभी में नर्वदेश्वर शिवलिंग का विशेष महत्व है। अन्य शिवलिंगों को विशेष पूजा अर्चना से प्राण प्रतिष्ठित करके पूजन योग्य बनाया जाता है। परंतु नर्वदेश्वर शिवलिंग स्वयं प्रतिष्ठित होती है। अतः किसी भी सोमवार को घर में इस शिवलिंग का प्रवेश करा कर नियमित पूजन कर सकते हैं। लाभ होगा

विशेष कामना अनुसार शिवलिंग एवं द्रव्य

स्फटिक शिवलिंग + दुग्ध - सर्वकार्यसिद्धि
नर्वदेश्वर शिवलिंग + दुग्ध + गंगाजल- सर्वरोगनाशक
पारद शिवलिंग + गन्ने का रस- ऐश्वर्य प्रदायक, धनप्रदायक
रज + गौमय शिवलिंग + तेल- सर्वशत्रु नाशक
स्वर्ण शिवलिंग + घी + शहद- स्थिर लक्ष्मी, अखण्ड सौभाग्य
रजत शिवलिंग + दही- सुख, समृद्धि
अष्टधातु शिवलिंग + तीर्थ स्थान का जल - मोक्ष प्राप्ति,

पापनाशक

मासिक राशिफल

16 जून - 15 जुलाई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में लाभ होने की संभावना रहेगी। नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो- घरेलू परेशानी लगी रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा- निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। योजनाओं से लाभ होगा। गुप्त शत्रु से बचें।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो- प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में ठीक हो जायेगा।

सिंह (LEO)- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे- प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होंगे। मानसिक तनाव से बचें।

कन्या (VIRGO)- टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पिता का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे। योजनाओं से लाभ होगा।

तुला (LIBRA)- रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते- इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग

प्राप्त होगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू- सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे- अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे स्वास्थ्य खराब रहेगा। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी- प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में हानि होने का भय रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। मास के अन्त में स्वास्थ्य खराब रहेगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची- कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। बहिनों का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में गुप्त शत्रु से बचें।

पुष्पित पारासर

ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार		गृहारम्भमुहूर्त	सर्वार्थ सिद्ध योग	
जून	जुलाई	जून - नही हैं। जुलाई - नही हैं।	जून	जुलाई
16. अमावस्या (स्नान/दान)	1. पूर्णिमा व्रत	गृह प्रवेश मुहूर्त	17 ता. सू.उ. से 18 ता. प्रातः 05:39 तक	04 ता. सू.उ. से रात्रि 10:53 तक
20. श्री विनायक चतुर्थी व्रत (अ.मास)	5. श्री गणेश चतुर्थी व्रत(अ.मास)	दुकान शुरू करने का मुहूर्त	18 ता. 06:00 से 19 ता. प्रातः 05:37 तक	07 ता. 17:44 से 08 ता. प्रातः 05:27 तक
24. दुर्गाष्टमी (अ.मास)	9. कालाष्टमी(अ.मास)	जून - 19, 24, 25, 27, 29	19 ता. सू.उ. से प्रातः 06:57 तक	09 ता. सू.उ. से 10 ता. दोप. 02:08 तक
28. एकादशी व्रत (अ.मास)	11. विश्व जनसंख्या दिवस	जुलाई - 3,	24 ता. 07:27 से 25 ता. प्रातः 05:27 तक	13 ता. 05:31 से 14 ता. प्रातः 05:29 तक
29. प्रदोष व्रत(अ.मास)	12. एकादशी व्रत(अ.मास)	नामकरण संस्कार मुहूर्त	27 ता. सू.उ. से दोप. 02:50 तक	
	13. प्रदोष व्रत(अ.मास)	जून - 19	29 ता. सू.उ. से 30 ता. रात्रि 04:31 तक	
		जुलाई - 8,		

मासिक राशिफल

16 जुलाई - 15 अगस्त

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय या नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो- अपमान होने का भय रहेगा। इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ, छ, के, को, हा- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। रोग का भय रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो- पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा। गुप्त शत्रु से बचें।

सिंह (LEO)- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे- इस मास में वायु विकार संबंधी कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

कन्या (VIRGO)- टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो- माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा।

तुला (LIBRA)- रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते-

इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू- इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। परेशानी होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे- व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी- इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। यात्रा होना भी संभव है।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

पुष्पित पारासर

ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार	
जुलाई	अगस्त
16.अमावस्या व्रत(अ.मास) 18. रथयात्रा जगन्नाथपुरी 19.श्री विनायक चतुर्थी व्रत 21.स्कन्ध पंचमी 22.कुमार षष्ठी 23.सूर्य सप्तमी, बालगंगाधर ति. जं. 24.दुर्गाष्टमी 25.भण्डली नवमी 27.देवशयनी एका. व्रत 29.प्रदोष व्रत 30.पूर्णिमा व्रत 31.गुरु पूर्णिमा (मुडिया पुनो), पार्थिव पूजन प्रा.	1.श्रावण सोमवार व्रत, श्री गणेश चतुर्थी व्रत 4. मंगला गौरी व्रत 5.षष्ठी 6.शीतला सप्तमी 7.कालाष्टमी, श्रीरवीन्द्रनाथ टेगोर पु. दि. 10.कामदा एकादशी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत 11. मंगला गौरी व्रत 12.प्रदोष व्रत 14.हरियाली अमावस्या 15. भा. स्वतंत्रता दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जुलाई - 22, 23, 27, 31 अगस्त- नहीं है।
गृह प्रवेश मुहूर्त
जुलाई - 22, 23, 27, 31, अगस्त- नहीं है।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जुलाई - 23, 24, 27, 29, 31 अगस्त- नहीं है।
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जुलाई -16, 23, 27, 31 अगस्त- 2, 6, 9, 10, 12

सर्वार्थ सिद्ध योग	
जुलाई	अगस्त
16 ता. सू.उ. से 17 ता. प्रातः 05:32 तक	1 ता. सू.उ. से प्रातः 07:40 तक
22ता. सू.उ. से 23 ता. प्रातः 06:15 तक	4 ता. सू.उ. से रात्रि 10:37 तक
25 ता. सू.उ. से प्रातः 11:25तक	6 ता. सू.उ. से रात्रि 07:39 तक
27 ता. सू.उ. से दोप. 01:50तक	8 ता. सायं 06:26 से 09 ता. प्रातः 05:44 तक
31 ता. 09:51 से 01 ता. प्रातः 07:40 तक	10 ता. सू.उ. से रात्रि 07:01तक
	13 ता. सू.उ. से रात्रि 11:13तक



उतावलापन (मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

गिद्ध बोला यह आप क्या कह रहे हैं। मानसिक या शारीरिक पीड़ा से आज या कल नष्ट हो जाने वाले सभी के लिए कौन पाप कमायेगा। महाराज हम प्राणियों का जीवन तो जल में चाँद की परछाई की तरह नाशवान है यही जानकर हमें हमेशा कल्याणकारी कार्यों में लगे रहना चाहिए। मृगतृष्णा के समान क्षणभंगुर संसार को विचारकर धर्म और सुख के लिए सज्जनों के संग मेल करना चाहिए। हजारों अश्वमेध यज्ञ एक पलड़े में और सत्य दूसरे पलड़े में तोलो तो सत्य ही भारी पड़ेगा। आप सत्य का ही दामन पकड़े और दोनों राज्यों में काचन सन्धि कराके प्रजा को सुखी जीवन प्रदान कीजिए। दूरदर्शी गिद्ध की बात सुनकर राजा हिरण्यगर्भ और मन्त्री चकवा इसी परिणाम पर पहुंचे कि हमें वही करना चाहिए जो गिद्ध कह रहा है। मन्त्री चकवा बोला ठीक है। यही होना चाहिए। राजहंस ने वस्त्र और आभूषणों की भेंट देकर मन्त्री दूरदर्शी गिद्ध का सत्कार किया फिर बाद में गिद्ध चकवे को लेकर चित्रवर्ण के पास गया। चित्रवर्ण ने गिद्ध मन्त्री के कहने पर उपहार देकर प्रसन्न करके सन्धि प्रस्ताव मान लिया और आदर सहित विदा किया।

विदाई के समय राजा चित्रवर्ण ने चकवे से कहा मन्त्री महोदय आप मान्य राजा हिरण्यगर्भ से हमारा प्रणाम कहना और कहना जो सन्धि। हुई है वह हम दोनों के लिए हितकर है। वह किसी भी प्रकार की कठिनाई न उठायें। कहना कि यदि उन्हें हमारी कभी भी आवश्यकता पड़े तो हमें खबर कर दें हम उनके लिए हर समय तैयार हैं और हां एक बात याद रखना समय असमय वे हमारे पास मिलने के लिए आते रहे जिससे कि मेल प्रेम की भावना बनी रहे और आप भी उनके साथ हमारे राज्य में अवश्य आना। कल हम अपने राज्य की तरफ कूच करेंगे। चकवा बोला जो आज्ञा सरकार मैं आपकी हर बात अपने मान्य राजा तक अवश्य पहुंचाउगा। परन्तु एक विनती मेरी है महाराज आप ग्रीष्म ऋतु में हमारे यहां ही प्रस्थान किया करें और हमें भी अपनी सेवा का अवसर देने की कृपा करें।

मन्त्री जी आप भी बहुत होशियारी की बातें करते हैं और भाई करें भी क्यूं ना बुद्धिमान आदमी के पास जो रहते हैं राजा चित्रवर्ण बोला। आपकी कृपा दृष्टि है महाराज वरना हमारे पास बुद्धि कहाँ है। आप लोगों की संगत का असर है जो कुछ काम चल रहा है। चकवा बोला। फिर चकवे ने राजा और उसके जाने माने मन्त्री दूरदर्शी से आज्ञा ली तथा अपने देश के लिए चल पड़ा। चकवे के जाने के बाद दूरदर्शी गिद्ध बोला महाराज जैसा हमने चाहा था, वैसा हो गया। अब हमें विध्याचल को लौट चलना चाहिए। राजा ने सैनिकों तथा सेनापतियों को आज्ञा दी कि कल सुबह हम अपने राज्य लौट रहे हैं। इसलिए आप सब अपनी पूरी तैयारी के साथ चलने का प्रबन्ध करें। दूरदर्शी गिद्ध ने आदेश सेनापतियों तक पहुँचा दिया तथा अगले दिन राजा चित्रवर्ण और उनकी सेना ने अपने राज्य के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में कई स्थानों पर ठहरकर वे अपने घर पहुँचे। घर जाकर राजा चित्रवर्ण ने अपने सेनापतियों तथा होनहार सैनिकों को पुरस्कार दिये और उन्हें अपने अपने घर जाने की आज्ञा दी। सभी ने अपने अपने घर जाकर मनोवांछित फल पाया। सभी आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे। सन्धि की कहानियां सुनाकर विष्णु शर्मा बोले वत्स अब बोलो और क्या सुनाऊँ। राजपुत्र बोले महाराज आप की कृपा से हम लोगों ने राज्य कार्य के सभी अंग जान लिये हैं। सुनकर ज्ञान भी बढ़ा और आनन्द भी आया। यह सुनकर विष्णु शर्मा बोले यद्यपि ऐसा है तब यह भी हो, सभी राजा लोग विजयी राजाओं के साथ सन्धि करके रहें। सर्वत्र आनन्द छायारहे। सज्जन लोग सुखी हो। विद्वानों की कीर्ति फैले। मन्त्रियों के हृदय में सुनीति निवास करे। सर्वत्र प्रसन्नता विद्यमान हो। इसके अतिरिक्त यह भी कामना है, जब तक हिमालय की पुत्री पार्वती जी के संग भगवान शंकर रहें, जब तक मेघ में बिजली सदृश विष्णु भगवान के हृदय में लक्ष्मी रहें और जब तक चिंगारी सदृश सूर्य है। जैसे दावानल के समान मेरु पर्वत स्थित रहे, तब तक विश्व में कोई आपदा न आवे।

**सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं**

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

शेष पेज 09 से आगे.....

में वृद्धि होती है।

15. झाड़ू की दो साफ सीको को उल्टा सीधा रखकर नीले धागे से बांधकर घर के दक्षिण पश्चिम में रखने से दाम्पत्य जीवन में प्रेम बढ़ता है।

16. पति पत्नी के मध्य निरंतर प्रेम बनाये रखने के लिए यदि वह दोनों ध्यानपूर्वक किसी भी व्रत, पूर्णिमा, अमावस्या, एकादशी और यथा संभव दिन के समय में भी आपस में सम्बंध ना बनाये संयम से काम लें तो उनके बीच कभी भी मन मुटाव नहीं रहेगा। उस जोड़े पर हमेशा ईश्वर की शुभ दृष्टि बनी रहेगी।

17. यदि कोई स्त्री अपने सास ससुर और घर के सभी सदस्यों को सच्चे, निश्चल मन से पूर्ण आदर सम्मान दें तो उस का दाम्पत्य जीवन सदा हर्ष और उल्लास से भरा रहता है। उस स्त्री के माता पिता को भी अपने परिवार में किसी भी प्रकार की कोई भी दिक्कत नहीं आती है उनका परिवारिक जीवन भी निश्चय ही सुखमय बीतता है। यह बहुत ही अभूतपूर्व और परीक्षित उपाय है।

18. यदि किसी स्त्री का पति बहुत ज्यादा क्रोध करता हो तो स्त्री शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार, सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार किसी भी दिन नए सफेद कपड़े में एक डली गुड़, चाँदी एवं ताम्बे के 2 सिक्के, एक मुठी नमक और एक मुठी गेंहू को बांधकर घर में कहीं भी चुपचाप रख दें। कुछ समय बाद पति का स्वभाव बदलने लगेगा। वह बात बात पर क्रोध करना बंद कर देगा।

19. यदि कोई स्त्री नियमित रूप से शनिवार को चमेली का दीपक जलाकर श्री सुन्दर काण्ड का पाठ करती है, या किसी योग्य ब्राह्मण से करवाती है, तो उसका घर, पति तथा बच्चे हमेशा किसी भी प्रकार की विपदा से बचे रहते हैं। यदि साप्ताहिक न हो सके तो भी माह में कम से कम एक बार सुंदर काण्ड घर में अवश्य ही होना चाहिए।

20. रविवार की रात्रि में स्त्री थोड़ा सा सिंदूर पति के सोने वाले हिस्से में विस्तर पर बिखरा दें और सोमवार की सुबह स्नान के बाद माँ पार्वती का नाम लेते हुए जितना भी सिंदूर मिल जायें उससे अपनी माँग भर लें उसके सुहाग की उन्न लम्बी होगी।

21. विवाह के बाद केवल पति पत्नी ही नहीं पूरे परिवार का जीवन बदल जाता है। सामान्यतः लाख कोशिशों के बाद भी पति पत्नी के बीच कभी कभी थोड़ा बहुत तनाव उत्पन्न हो जाता है। यही छोटी छोटी तकरार लड़ाई झगड़ों में परिवर्तित हो जाए तो ये भी सामान्य सी बात ही है। ऐसे में वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रह पाता है। इस प्रकार की परिस्थितियों से बचने के लिए श्रीराम और सीता के फोटो की पूजा करनी चाहिए।

आजकल परिवार में पिता पुत्र के बीच में भी बहुत विरोध हो जाते हैं इससे परिवार में शांति भंग होने के साथ और भी बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। कई बार तो परिवार में विघटन की स्थिति भी आ जाती है। इससे बचने के लिए कुछ बहुत ही अचूक उपाय बताए जा रहे हैं।

1. यदि पिता की ओर से नाराजगी है तो पुत्र रविवार को सवा किलों गुड़ बहते हुए पानी में प्रवाहित करें, उसे ऐसा लगातार तीन रविवार को करना है। पिता की नाराजगी जल्दी दूर हो जाएगी।

2. पुत्र को नियमित रूप से गुड़, लाल फूल मिलाकर जल सूर्य देव को अर्पित करना चाहिए। पिता का स्नेह पुनः पुत्र पर बन जायेगा।

3. रविवार को पुत्र यदि अपने पिता को कोई भी लाल रंग का उपहार दे तो अति शीघ्र पिता का पुत्र से विरोध खत्म हो जायेगा।

4. यदि पुत्र रूष्ट है तो पिता प्रत्येक शनिवार को सुबह पीपल में मीठा जल एवं शाम को सरसों के तेल का दीपक जलायें या सरसों के तेल की धार अर्पित करें तों बहुत ही जल्दी पिता पुत्र के मध्य अवरोध खत्म हो जायेगा।

5. यदि किसी महिला का ससुर उससे नाराज रहता हो तो वह महिला प्रतिदिन जल में गुड़ मिलाकर सूर्यदेव को अर्घ्य दे तो उसकी यह समस्या दूर हो जाती है।

6. किसी महिला का उसकी सास के साथ झगड़ा होता रहता हो तो वह स्त्री पूर्णिमा की रात में खीर बनाकर चंद्रमा की किरणों में रखें और फिर वह खीर अपनी सास को खिला दें। सास बहू में बनने लगेगी।



शेष पेज 7 से आगे.....

कंधों में दर्द होता है। कई कई घंटे कंप्यूटर पर बैठकर माउस का उपयोग व टाइपिंग आदि से भी हाथों की नसों गरदन व कंधों में जकड़न व दर्द की शिकायत देखने को मिलती है। और सरदियों में इस प्रकार के दर्द के बढ़ने या पैदा होने की संभावना और ज्यादा बढ़ जाती है।

हमारे कंधे जिस जोड़ पर टिके हैं उसे बॉल एंड सॉकेट ज्वाइंट या कप बॉल ज्वाइंट कहा जाता है। इस तरह के जोड़ में हड्डियों का कम और तंतुओं का ज्यादा सपोर्ट होता है। लेकिन उन पर अधिक वजन रखने से व अधिक देर तक एक ही मुद्रा में बैठकर काम करने से उन पर दबाव पड़ता है। इस तरह उनकी मजबूती व स्थिरता दोनों ही खतरे में पड़ जाते हैं। लिगामेन्ट एक तरह का फाइबरयुक्त ऊतक है। जो यो हड्डियों को जोड़ने का कार्य करता है। यदि इन पर अधिक देर तक बजन व भार पड़ता है तो इनमें दर्द होना स्वाभाविक है। डॉक्टरों व विशेषज्ञों का कहना है कि यदि हम अपनी व्यस्त जिंदगी में जोड़ों के व्यायाम पर ध्यान नहीं देते तो इस तरह की समस्याओं का उठना स्वाभाविक है। इसके साथ ही आधुनिक जीवन शैली ने भी कंधों से जुड़ी समस्याओं को बढ़ाया है। इस तरह यदि कंधे व कमर दर्द से जुड़ी हुई बच्चों एवं युवाओं की समस्याओं का समाधान ढूँढना है तो जिंदगी को थोड़ा हल्का करना होगा। बोझ न तो हम अपने मस्तिष्क में लादकर चलें और न ही बहुत ज्यादा कंधों पर बच्चों के कंधे तो बड़े होने के साथ साथ धीरे धीरे मजबूत होते हैं। इसलिए उनकी शारीरिक व मानसिक स्थिति को ध्यान में रखकर उनके शारीरिक व मानसिक पोषण हेतु खान पान व व्यायाम की जरूरत है और युवा वर्ग को भी अपने कंधे मजबूत करने हैं तो उचित खान पान के साथ योग व्यायाम को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा। यदि देर तक बैठकर काम करना है तो बीच बीच में उठकर हाथों व कंधों का व्यायाम करना फायदेमंद होता है इससे शरीर में स्फूर्ति आती है। और मन भी अच्छा साथ देता है।

कंधों एवं कमर दर्द की समस्याएँ आधुनिक जीवन शैली की देन हैं। आज के समय में न तो भोजन इतना पौष्टिक है और न ही जल एवं वातावरण। इस कारण शारीरिक एवं मानसिक समस्याएँ बचपन व युवा वर्ग में देखने को अधिक मिल रही हैं। फिर भी यदि हम अपने खान पान व रहन सहन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन कर लें तो इन समस्याओं से बच सकते हैं जीवन की शुरुआत में ही बच्चों पर बोझ न बढ़ाएँ उनके कंधों को भी मजबूत बनने दे तभी हम देश के नौनिहालों को स्वस्थ व उनके भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।



शेष पेज 6 से आगे

कारक और शुभ फलदायक बन जाता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रत्येक राशि के लिये उसके नवम भाव का स्वामी उसका मित्र एवं प्रबल कारक होता है। वृश्चिक लग्न के लिये बुध अष्टम एवं एकादश दो अशुभ भावों का स्वामी होकर अशुभ फल ही अधिक देता है। धनु लग्न के लिये बुध अशुभ परिणाम दायक रहता है। क्यों कि यह सप्तम एवं दशम दो केन्द्र भावों का स्वामी होता है। मकर लग्न के लिए बुध भाग्येश होकर लाभदायक है भले ही यह छठें भाव का स्वामी है कुम्भ लग्न के लिये बुध पंचमेश एवं अष्टमेश होकर मिश्रित फल देने वाला होता है। मीन लग्न के लिये बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश होकर केन्द्राधिपत्य दोष के कारण स्वास्थ्य के मामले में अशुभ परिणाम लेकिन धन के मामले में शुभ रहता है।

बुध से बनने वाले कुछ श्रेष्ठ योग-

1. मद्र पंच महापुरुष धोग- यदि बुध स्वराशि का होकर या अपनी उच्च राशि का होकर लग्न से केन्द्रस्थ हो तो इस योग का निर्माण होता है। यह योग राजयोग की तरह जातक को विलक्षण बुद्धि का मालिक बनाता है। वह कठिन कार्य को भी सहजता से हल करने वाला, पराक्रमी, प्रभावी व्यक्तित्व वाला, लोगों का सहायक, शनैः प्रगति करने वाला होता है और अन्ततः उच्च पद पा लेता है। कई व्यापारियों, विद्वानों तथा राजनेताओं की कुण्डलियों में यह योग रहा है।

2. सुनफा धोग- जन्म कुंडली में सूर्य को छोड़कर कोई भी ग्रह चंद्र से दूसरे भाव में हो तो यह योग बनता है। बुध के द्वारा सुनफा योग होने पर व्यक्ति सुंदर बुद्धिमान, धार्मिक सामाजिक रुद्धियों को मानने वाला तथा ललित कलाओं में रुचि रखने वाला होता है।

3. भास्कर धोग- इस योग के निर्माण में बुध की अहम भूमिका होती है। यदि सूर्य से दूसरे भाव में बुध हो तथा बुध से एकादश भाव में चंद्रमा हो और चंद्रमा से पंचम या नवम भाव में गुरु हो तो यह योग बनता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त धनी, निरंतर धन संचय करने वाला, कई शास्त्रों का ज्ञाता शरीर से स्वस्थ एवं शत्रुहंता होता है।

4. बुधादित्य धोग- कुण्डली में कहीं भी सूर्य बुध एकसाथ हो तो योग बनता है। लेकिन यदि बुध 10 अंश से कम हो तो पूर्ण फल नहीं मिलता है। बुध एक ऐसा ग्रह है जो सूर्य के साथ होकर कभी भी अस्त नहीं होता है और न ही उसका प्रभाव क्षीण होता है। इस योग वाला जातक अपने जीवन में सर्वत्र प्रसिद्धि पाता है तथा वह अत्यन्त बुद्धिमान एवं सुखी होता है।

5. रुद्र धोग- बुध गुरु बलवान होकर एक साथ बैठे हो या बुध पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसा जातक राजा या राजा के तुल्य होता है। वह उच्च पद पर सुशोभित होता है।

6. महाराजाधिराज धोग- मेष लग्न में बुध स्थित हो तथा गुरु कर्क राशि अर्थात् चतुर्थ भाव में हो तो यह योग बनता है यह योग जातक को प्रबल भाग्यवान एवं शक्तिशाली बनाता है। जातक निश्चित ही उच्च राज्य पद प्राप्त करता है।

7. कैलाश धोग- यदि बुध सूर्य के साथ मिथुन या कन्या राशि में हो तो यह योग बनता है। ऐसा जातक राजा या राजा के समतुल्य होता है। तथा जीवन में पूर्ण आनंद प्राप्त करता है।

यहां कतिपय योगों का उल्लेख किया गया है जैसे बुध से और भी कई शुभ योग बनते हैं जिनमें बुध की मुख्य भूमिका रहती है। अब कुछ उदाहरण कुंडलियों पर दृष्टिपात करें-

उदाहरण 1. उद्योगपति राहुल बजाज जन्म दिनांक 10.6.1930

समय 05:10 कोलकाता। भारत के जाने माने उद्योगपतियों में से एक। वृषभ लग्न के लिये बुध प्रबल धनदायक ग्रह है। बुध शुक्र में राशि परिवर्तन है बुध धनेश एवं पंचमेश है धन भाव में लग्नेश है तथा केन्द्रेश मंगल भी वहीं स्थित है बुध केन्द्रेश सूर्य के साथ लग्नस्थ है। बुधादित्य योग है। दशम कर्म भाव में लाभेश गुरु है। भाग्येश एवं कर्मेश शनि लाभ भाव में हैं। शनि गुरु में राशि परिवर्तन है। शनि का प्रभाव लग्न एवं बुध पर है। धन के स्थाई कारक गुरु की पूर्ण दृष्टि धन भाव में मिथुन राशि पर लग्नेश शुक्र पर तथा मंगल पर भी है अतः बुध के प्रभाव ने इन्हे प्रसिद्ध उद्योगपति बनाया।

उदाहरण 2. श्री अनिल अम्बानी जन्म दिनांक 04.06.1959 समय 24:00 स्थान- मुम्बई

श्री धीरूभाई अंबानी के पुत्र करोड़ों रुपये के रिलायंस औद्योगिक समूह के स्वामी है। राजसभा के सदस्य रहे। बुध ने इन्हे अत्यधिक धनमान सम्मान एवं पद दिया है। लग्नेश शनि का मित्र पंचमेश बुध चतुर्थ भाव का कारक होकर केन्द्रेश सूर्य के साथ चतुर्थ भाव में स्थित है। प्रबल बुधादित्य योग है जिस पर धनेश गुरु की पूर्ण दृष्टि है। गुरु की धन भाव पर भी पूर्ण दृष्टि है। गुरु की भाग्येश शुक्र एवं कर्मेश मंगल पर भी पूर्ण दृष्टि है।

उदाहरण 3. डा. नारायण दत्त श्रीमाली दिनांक 20.04.1935 समय 10:20 स्थान- ढीढस जोधपुर

ज्योतिष यंत्र मंत्र तंत्र एवं हस्तरखा विज्ञान पर कई श्रेष्ठ स्तर की पुस्तकों के यशस्वी लेखक विश्व में ज्योतिष को विज्ञान के रूप में स्थापित करने वाले महान विभूति। ज्योतिष के प्रकाशन से करोड़ों रुपये कमाने वाले व्यक्ति रहे। अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे लेकिन योगों ने सर्वाधिक ऊंचाई पर पहुंचा दिया। कई सफल भविष्यवाणियों उनके द्वारा की गईं। उनकी कुण्डली में लग्नेश एवं सुखेश बुध पराक्रम भाव के स्वामी उच्च राशि के सूर्य के साथ लाभ भाव में बुधादित्य योग बनाये हुए है। पंचमेश शुक्र अपनी ही राशि वृषभ में स्थित है पंचम में गुरु चन्द्र गजकेशरी राजयोग बनाकर बुधादित्य योग पर पूर्ण दृष्टि डाले हुए है। भाग्येश शनि भाग्य भाव में अपनी कुम्भ राशि में स्थित है लाभ स्थान पर पूर्ण दृष्टि है मंगल और बुध में राशि परिवर्तन है मंगल की पूर्ण दृष्टि कर्म तथा लाभ भाव पर बुध एवं सूर्य पर है। अतः बुध के साथ इन बलवान योगों ने श्रीमाली जी को विलक्षण बुद्धि के साथ धन मान पद आदि प्रदान कर उन्हें गुरु के रूप में स्थापित कर विश्व में विख्यात बना दिया।



शेष पेज 10 से आगे

है तथा अच्छा संबंध बनाकर रखता है तब खराब चन्द्रमा अच्छा हो जाता है। हस्तरेखा के हिसाब से जिस व्यक्ति का नाखून गोल होता है चन्द्रमा का स्थान संकीर्ण नहीं होता चन्द्रमा पर्वत उठा हुआ होता है तब व्यक्ति अच्छा पढा लिखा तथा ज्ञानवान होता है। जिनके हाथ में चन्द्रमा संकीर्ण है विचार शक्ति कम, संवेदनशील कम, एकान्त प्रियता अधिक है नाखून गोल नहीं है सोचता है। लेकिन व्यावहारिक रूप नहीं देता है। अगर वह व्यक्ति अच्छा चन्द्रमा वाला गुण अपना लेता है तब कमजोर चन्द्रमा भी अच्छा हो जाता है।

जन्मकुण्डली में मंगल को भाई का कारक माना गया है। मंगल को दोस्त मित्र का भी कारक माना गया है। मंगल को खून भी माना गया है। जब व्यक्ति को अपने दोस्त मित्र की मदद नहीं मिलती या भाई का सुख नहीं प्राप्त होता है व्यक्ति कि हथेली पतली संकटी लम्बी होती है नाखून लम्बे और पतले होते हैं। ऐसे व्यक्ति मंगल को ठीक रखने के लिये भाई एवं दोस्त मित्र की मदद करते रहें। वीर पुरुषों, महान पुरुषों तथा वीरागनों की जीवनी पढ़कर अपने अन्दर दिल पैदा करें। मंगल अगर अच्छा होता है तब व्यक्ति का हाथ और नाखून चौरस होता है तथा कुछ हथेली मोटी होती है। अगर व्यक्ति व्यवहारिक बन जाता है तथा हिम्मती बन जाता है तब उसकी हथेली नाखून चौरस हो जाते हैं। अगर मंगल खराब है तब व्यक्ति की हथेली चौरस के जगह लम्बी पतली और सकरी होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी और धीरे धीरे काम करते हैं तथा काम करने की योजना बनाते रहते हैं और दिमाग के जगह दिल से सोचते हैं। हाथ में मंगल के दो स्थान होते हैं। एक मंगल अंगूठे के पास शुक्र पर्वत के ऊपर होता है जब इस स्थान पर क्रास होता है या यहां से तिखी रेखायें निकलकर भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा को काटती है या बुध पर्वत के नीचे मंगल पर्वत को काटती है। तब मंगल बंद हो जाता है मंगल बंद वाला व्यक्ति हमेशा दुखी और परेशान रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत अधिक क्रोधी होता है। किसी बड़े बुर्जुग गुरुजन की बात को नहीं मानता है। इसलिये दुखी गरीब बीमार और परेशान रहता है। मंगल को अच्छा बनाने के लिये जोश में नहीं होश में जीना चाहिये। जब व्यक्ति एक दम क्रोधी हो जाता है। तब उसके अन्दर राक्षस प्रवेश कर जाता है। जो व्यक्ति खराब काम करवाकर उसको गरीब बीमार परेशान और दुखी बना देता है ऐसे व्यक्तियों को अपनी बुरी आदतों को छोड़कर मंगल बंद से बचना चाहियें।

बुध को लाल किताब ने बेटी बहन बुआ और मौसी का कारक माना गया है। साथ में बुध को गुण ढंग हुनर का भी कारक माना गया है। जो व्यक्ति शारीरिक मेहनत के जगह गुण सीखकर हुनर सीखकर दिमागी काम करता रहता है और ऐसा काम करता रहता

है। दूसरे लोग प्रभावित होते हैं उसे अपने बहन बुआ बेटी और मौसी से अच्छा संबंध है तब उसका बुध अच्छा है जिसे बुध अच्छा करना हो उसे गुण ढंग हुनर सीखना चाहिये।

जिस व्यक्ति की हथेली कोमल मुलायम गुलाबी होती है तथा बुध की अंगुली बड़ी होती है और अंगुलीयों के तरफ हथेली चौड़ी होती है। ऐसे व्यक्ति का बुध ग्रह अच्छा होता है। बुध ग्रह के अच्छे प्रभाव वाला व्यक्ति दूसरों से दोस्ती बनाकर लाभ प्राप्त करना जानता है। जिददी नहीं होता है समयनुसार अपने को बदल लेता है। व्यक्ति नकलची भी होता है। दूसरे व्यक्ति की हु बहु नकल कर लेता है बुध से प्रभावित व्यक्ति शहर में रहता है जबकि शनि से प्रभावित व्यक्ति गांव में रहता है।

गुरु ग्रह को लाल किताब ने सन्त महात्मा पंडित ज्ञानी जन बड़ा बुर्जुग माना है इसलिये जो व्यक्ति अपने दादा की सेवा करता है बड़े बुर्जुग ज्ञानीजन, गुरु सन्त महात्मा तथा बड़े की सेवा करता है उनसे संबंध अच्छा बनाकर रखता है उससे अच्छा गुण सीखता रहता है मन मर्जी नहीं करता है दूसरे व्यक्ति का एहसानमन्द रहता है इसके कुण्डली में गुरु ग्रह अच्छा हो जाता है। गुरु जिनके कुण्डली में अच्छा होता है उनका हाथ बहुत बड़ा होता है। जब व्यक्ति धैर्य के साथ विस्तार में जाकर गहराई में जाकर काम करता है तब गुरु ग्रह अच्छा होता है। जब व्यक्ति का हाथ बहुत छोटा होता है तब व्यक्ति का हाथ संकीर्ण विचार वाला होता है। किसी विषय के विस्तार में नहीं जाता है न ही गहराई में जाकर काम करता है। न उसकी बर्दाश्त शक्ति न धैर्य शक्ति अच्छी होती है। अगर व्यक्ति गुरु ग्रह का अच्छा गुण अपना ले तब उसकी हथेली बड़ी हो जायेगी। जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में गुरु ग्रह अस्त वक्री होता है या पाप ग्रहों से पीडित होता है तब वैदिक ज्योतिष वृहस्पति को खराब मानती है जबकि सप्तम छोटे आठवे दशम घर में बैठा गुरु को लाल किताब खराब मानती है। दशम घर में कालपुरुष की मकर राशि पड़ती है। गुरु मकर राशि में नीचा हो जाता है। साथ में लाल किताब यह भी कहती है कि अगर गुरु ग्रह से संबंधित को सुख सुविधा जातक को प्राप्त हो रही है तब गुरु ग्रह किसी न किसी प्रकार ठीक हो गया है और गुरु ग्रह से संबंधित चीजे नहीं प्राप्त हो रही है तब गुरु ग्रह किसी न किसी तरह से खराब हो गया है या जातक में अपने खराब कर्मों के कारण खराब कर लिया है। व्यक्ति के हाथ में कर्म होता है भाग्य नहीं है। अच्छा कर्म करने से भाग्य अच्छा होता है। सूर्य शुक्र के मिलने से गुरु ग्रह बनता है। जिसका गुरु ग्रह अच्छा होता है ऐसे जातक का माथा चौड़ा होता है। बोलना चालना बैठना गुरु की तरह समझदार होगा ऐसा व्यक्ति स्वभाव का रूखा होता है। शेष अगले क्रमांक में.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधान की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें-

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द्र शर्मा के एस. बी. आई. एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन

ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।

फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262

E-mail : mail@bhavishydarshan.in

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाएँ (रुद्राक्ष, स्फटिक)

रुद्राक्ष माला
रुद्राक्ष माला (मध्यम)
रुद्राक्ष माला छोटे दाने
रुद्राक्ष-स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृह्मजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)

दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय-शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रुद्राक्ष

सिद्ध एकमुखी (गोल दाना)
सिद्ध एकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रुद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रुद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रुद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रुद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रुद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रुद्राक्ष

सिद्ध पांच मुखी रुद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रुद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रुद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रुद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र
पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुएँ

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढक

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या
मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान
बी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®

ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262